



राजपत्र, हिमाचल प्रदेश (असाधारण)

हिमाचल प्रदेश राज्य शासन द्वारा प्रकाशित

शिमला, वीरवार, 13 जुलाई, 2006/22 आषाढ़, 1928

हिमाचल प्रदेश सरकार
पर्यटन एवं नागरिक उड्डयन विभाग
अधिसूचना

शिमला-171 002, 9 जून, 2006

संख्या टी. एस. एम.-एफ.(1)-1/2004.—हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल इस विभाग की अधिसूचना सं० 6-12/91-टी.एस.एम.(सैक्ट)-II दिनांक 9-8-2000 का अतिक्रमण करते हुए पर्यटन के विकास के लिए उपबन्ध-“क” के अनुसार पर्यटन नीति-2005 बनाने का सहर्ष आदेश देते हैं तथा इसे सभी सम्बन्धित व्यक्तियों की सामान्य सूचनार्थ अधिसूचित/प्रकाशित किया जाता है।

यह नई पर्यटन नीति-2005 तत्काल प्रभाव से लागू होगी।

आदेश द्वारा,
अभय शुक्ला,
प्रधान सचिव (पर्यटन)।
मूल्य : 1 रुपया।

पर्यटन एवं नागरिक विमानन विभाग

पर्यटन नीति 2005

लक्ष्य विवरण :

वर्ष 2020 तक राज्य के आर्थिक विकास हेतु पर्यटन को विश्व स्तर तक फैलाना/पहुंचाना।

1. प्रस्तावना

- 1.1 पर्यटन उद्योग विश्व भर में तीव्र गति से विकसित हो रहा है। पूरे विश्व में पर्यटकों की आवाजाही में वृद्धि हो रही है तथा आशा है कि शीघ्र ही इनकी संख्या 1.5 करोड़ तक पहुंच जायेगी। पर्यटन से पूरे विश्व में 11 प्रतिशत श्रम बल तथा 10.2 प्रतिशत सकल घरेलू उत्पाद उपलब्ध होता है। इस उद्योग के गतिशील विकास से स्पष्ट प्रतीत होता है कि इस क्षेत्र में प्रत्येक 2.5 सैकिंड में एक नये रोजगार का सृजन हो रहा है।
- 1.2 इस क्षेत्र के प्रणाली तथा गतिशील स्वरूप के लिए आवश्यक है कि पर्यटन के बदलते रूप को अंगीकार किया जाए। नीतियां समय, परिस्थितियों, उपलब्ध संसाधनों, तकनीकों, इससे भी अधिक पणधारियों की आवश्यकताओं के अनुसार तैयार की जाती है।
- 1.3 इस नीति दस्तावेज का मुख्य उद्देश्य प्रदेश में पर्यटन विकास का मार्ग दर्शन करना है। हिमाचल प्रदेश पहले ही सुस्थापित तथा विख्यात पर्यटन स्थल है। प्रदेश के पर्यटन के विकास हेतु सभी पर्यटन संभावनाओं का दोहन करना होगा जिससे राज्य में आर्थिक विकास तथा समृद्धि आयेगी, इसके अतिरिक्त बेरोजगारी तथा गरीबी की समस्याओं का समाधान भी होगा। सरकार तथा सरकार से इतर पर्यटन उद्योग, पर्यटन संचालकों तथा अन्य पणधारियों से व्यापक परामर्श करने के उपरान्त ही यह दस्तावेज तैयार हुआ। नीति का खाका तैयार करने के अतिरिक्त, दस्तावेज में इसके क्रियान्वयन बारे तथा नीति के क्रियान्वयन हेतु विशेष कार्य योजना का उल्लेख किया गया है।
- 1.4 प्रकृति ने हिमाचल प्रदेश को हरी-भरी घाटियां, हिमाच्छादित पर्वत मालायें, स्वच्छ, शांत, आतिथ्यपूर्ण तथा सुखद वातावरण, हंस मुख लोग और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत प्रदान की है—जो पर्यटकों को शायद ही कहीं अन्यत्र देखने को मिले।
- 1.5 हिमाचल की गोद में बसा होने के कारण प्रदेश की प्रकृति तथा अनूठी छटा/प्रतिबिम्ब विश्व के लिए आकर्षण का केन्द्र है। हिमाचल के बाहरी सीमावर्ती भू-भाग में शिवालिक पहाड़ियां स्थित हैं जो छोटी-छोटी घाटियां तथा झाड़ियों के घने जंगल से प्रतीत होती हैं। मध्यवर्ती पर्वतमालाओं में ऊंचे-ऊंचे शानदार देवदार तथा स्ट्रास के पेड़ हैं तथा उनके नीचे सुन्दर अल्पाइन की चारागाहें हैं जो हिमाचल पर्वत की हिमोच्छादित चोटियों से अलंकृत हैं।
- 1.6 जैसा कि हम जानते हैं कि हिमाचल में पर्यटन को 19वीं शताब्दी में उस समय बढ़ावा मिला जब अंग्रेजों ने प्रदेश में हिल स्टेशनों (पहाड़ी सैरगाहों) की स्थापना की थी। इससे पूर्व हिमाचल प्रदेश को तीर्थ स्थान माना जाता था। प्रदेश में पर्यटन को बढ़ावा तो तब मिला जब अंग्रेजों ने 1864 ई0 में शिमला को भारत की ग्रीष्मकालीन राजधानी घोषित किया। स्वतन्त्रता प्राप्ति तथा 1971 में पूर्ण राज्य का दर्जा प्राप्त करने के बाद प्रदेश में पर्यटन के आधारभूत ढांचे में अधिक निवेश होने से राज्य पर्यटन के मानचित्र पर उभर कर आया

यद्यपि प्रदेश में पर्यटन क्षेत्र में 1980 के दशक के मध्य से तथा 1990 दशक में कश्मीर समस्या होने के कारण भारी उछाल आया जब उक्त अवधि में होटलों की संख्या 350 से 1710 तक पहुँच गई और पर्यटकों की संख्या 6300 से बढ़कर 36000 हो गई तथा बिना किसी समस्या के प्रदेश इस लक्ष्य को हासिल करने में सफल रहा। गूढ़ सूझबूझ के कारण ही प्रदेश अब पूर्ववर्ती वर्षों की अपेक्षा समस्याओं से निपटने में पूर्ण रूप से समर्थ है तथा इस दस्तावेज में उन सभी समस्याओं का उल्लेख करने का प्रयास किया गया है।

- 1.7 वर्ष 2004 के दौरान प्रदेश में 60.5 लाख (6.5 मिलियन) पर्यटकों का आगमन हुआ जिनकी संख्या लगभग प्रदेश की जनसंख्या के बराबर है। (2.04 लाख विदेशी पर्यटक थे) अतः उनकी संख्या की तुलना में प्रदेश ने प्रत्याशा से अधिक कार्य किया। अब चुनौती ये है कि स्तरीय/विशेष पर्यटकों को कैसे आकर्षित किया जाए तथा प्रदेश में उनके ठहराव में कैसे वृद्धि की जाए। हमें व्यापक स्तर पर यह भी चिंतन करना होगा कि देशीय पर्यटकों की भी विगत से भिन्न पसंद है। स्तरीय पर्यटकों को केन्द्र बिंदु बनाते हुए राज्य सरकार का यह भी प्रयास रहेगा कि सतत निरंतर पर्यटन को बढ़ावा दिया जाए और निजी क्षेत्र को भी प्रोत्साहित किया जाए कि वह प्रदेश के विद्यमान वातावरण तथा पर्यावरण से कोई छेड़छाड़ किए बिना पर्यटन से संबन्धित आधारभूत ढांचा विकसित करें।
- 1.8 आगन्तुकों/पर्यटकों का प्रदेश में ठहराव बढ़ाने के लिए पर्यटन सम्बन्धी गतिविधियों के विकास पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है और नये स्थलों का पता लगाया जा रहा है। देहातों तथा अप्रचारित क्षेत्रों में पर्यटन को बढ़ावा देने हेतु उपलब्ध संसाधनों से ही समुचित आधारभूत ढांचा तैयार किया जायेगा। इससे पहले हिमाचल प्रदेश को गर्मी के मौसम के लिए ही जाना जाता था। इन मौसम आधारित तथ्यों को मिटाने और गर्मी के अतिरिक्त दूसरे मौसमों में भी पर्यटन को और अधिक आकर्षित करने हेतु कई प्रयास किए जा रहे हैं। अब हिमाचल प्रदेश "सभी मौसमों तथा सभी कारणों" से पर्यटन के लिए जाना जाता है/प्रसिद्ध है।
- 1.9 पर्यटन राज्य के घरेलू उत्पाद के 8 प्रतिशत के लगभग अंशदान करता है जो अनुमानतः बागवानी क्षेत्र के अंशदान के समतुल्य ही है। समुचित योजना तथा संरचनात्मक विकास के कारण ही वर्ष 2020 तक इस नीति के द्वारा पर्यटन अंशदान में 15 प्रतिशत वृद्धि करने का प्रस्ताव है।

2. नीति के उद्देश्य

1. हिमाचल प्रदेश को देश तथा विदेशों में मुख्य अग्रणी पर्यटन स्थल के रूप में स्थापित करना।
2. राज्य के आर्थिक विकास और समृद्धि हेतु तथा रोजगार के साधन उपलब्ध कराने के लिए पर्यटन की मुख्य भूमिका सुनिश्चित करना।
3. पर्यटन ढांचा तैयार करने हेतु निजी क्षेत्र विशेषकर जनता तथा निजी भगीदारी के माध्यम से सुदृढ़ एवं सतत भागीदारी को प्रोत्साहन देना।
4. ऐसे सतत पर्यटन को प्रोत्साहन देना जो केवल पर्यावरण के अनुकूल ही न हो अपितु उससे ग्रामीण लोगों की आर्थिक दशा में भी सुधार हो।
5. स्तरीय पर्यटकों को आकर्षित करना तथा राज्य में उनके ठहराव में वृद्धि करना।
6. राज्य को प्राकृतिक और मानव निर्मित संस्कृति की रक्षा करना।
7. पर्यटन के विकास तथा इससे सम्बन्धित गतिविधियों के लिए नागरिक समितियों और गैर-सरकारी संगठनों को प्रोत्साहन देना।
8. साहसिक पर्यटन के लिए हिमाचल प्रदेश को एक विशेष स्थल के रूप में स्थापित करना।

3. हिमाचल पर्यटन एक स्वीट (SWOT) विश्लेषण :

3.1 सामर्थ्य, न्यूनताओं, अवसरों और चुनौतियों का विश्लेषण

4.1 क्षमता :

1. विश्व में एक ही ऐसा विरला स्थान है जहां पांच भिन्न-भिन्न ऋतुएं वर्ष भर पर्यटकों के आवागमन को आकर्षित करने की सम्भावना रखती हैं।
2. राजकीय और सामाजिक स्थिरता।
3. शान्तिप्रिय आतिथ्यकारी राज्य के रूप में।
4. स्वास्थ्यवर्धक जलवायु।
5. प्रदूषण रहित पर्यावरण।
6. दुर्लभ पर्यावरण मित्र पर्यटन, स्थान, साहसिक, संस्कृति धरोहर, विश्राम स्थल वीहड़ स्थल इत्यादि को संमिश्रित करने का प्रस्ताव।
7. काफी अच्छा ढांचा।
8. उच्च साक्षरता।
9. समृद्ध इतिहास एवं धरोहर जो सभी को कुछ न कुछ प्रदान करता है। इनमें सहस्रों वर्षों पुराने बौद्धमठों, प्राचीन मंदिर, गिरिजाघर, कब्रिस्तान शामिल हैं।
10. पर्यटन ईकाइयों को स्थापित करने के लिए विशेष प्रेरणा पैकेज।
11. पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए सुदृढ़ राजनीतिक ईच्छा शक्ति।

4.2 कमियां :

1. राज्य में हवाई मार्ग व रेलमार्ग कम होना।
2. विदेशी पर्यटकों का अपर्याप्त आवागमन।
3. वर्ष भर प्रदेश में सही मात्रा में पहुंच न होने के कारण पीक सीज़न में नागरिक ढांचे पर भारी बोझ पड़ना।
4. महत्वपूर्ण पर्यटन स्थानों और ऐतिहासिक पर्यटक स्थलों पर प्रशिक्षित मार्गदर्शकों की कमी।
5. अधिक ऊंचाई पर स्थापित पर्यटन के स्थान।
6. हाल ही में किसी भी नए प्रमुख पर्यटन स्थान के सम्बन्ध में चर्चा नहीं हुई है।
7. महत्वपूर्ण पर्यटन स्थलों पर उपयुक्त पार्किंग स्थानों की कमी।
8. राज्य से बहार घटिया विपणन तथा देश में अपर्याप्त विपणन।
9. बहुत कम बजट।
10. भू-अर्जन की समस्या।
11. वन भूमि में परिवर्तन की समस्या।

4.3 अवसर :

1. क्रियाकलाप आधारित पर्यटन के लिए जैसे कि वाईट वाटर रॉफ्टिंग, पैराग्लाइडिंग, ट्रैकिंग पर्वतारोहण जलक्रीड़ा, माउंटेन बाइकिंग, कार रैलिज इत्यादि की पर्याप्त सम्भावना बनाना।
2. समाज के सभी वर्गों और धार्मिक आस्थाओं वाले लोगों को आकर्षित करने के लिए धरोहर पर्यटन हेतु पर्याप्त आधार।
3. इको पर्यटन प्रोत्साहन द्वारा प्रकृति प्रेमियों के लिए आदर्श गन्तव्यों का विकास।

4. धरोहर और तीर्थाटन पर्यटन के मध्य साहचर्य उत्पन्न करना।
5. प्रकृति प्रेमियों विशेषकर पक्षी दर्शकों को आकर्षित करने के लिए राज्य के वेटलैण्डों को विकसित करना।
6. राज्य को मुक्त विश्वविद्यालय और मानवविज्ञान, पुराणविद्या, पक्षी विज्ञान आदि शिक्षा केन्द्र के रूप में बढ़ावा देना।
7. फिल्म उद्योग के लिए आदर्श गन्तव्य के रूप में स्थान देना।
8. हिमाचल के पास सभी आयुवर्गों, समूहों, धार्मिक आस्थाओं के लोगों के हितों के लिए कुछ न कुछ देने के लिए है। विभिन्न पर्यटन पैकेजों को विकसित करने के लिए असीमित संभावनाएं हैं।
9. विश्व में हिमाचल एक अग्रणी साहसिक गन्तव्य स्थान बन सकता है।
10. प्रेमी युगलों और प्रकृति अन्वेषकों, शान्ति, और शान्तिप्रिय वातावरण के लिए बीहड़ पर्यटन को बढ़ावा देना।
11. नए स्थानों और सुन्दर अचिन्हित पर्यटन स्थलों का पता लगाना। यह वर्तमान पर्यटक स्थलों के बोझ को भी कम करेगा।

4.4 चुनौतियां :

1. पर्यटकों के अत्यधिक आगमन के बोझ से प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों पर पर्यटक मौसम के दौरान नागरिक सुख-सुविधाओं का समय-समय पर समाप्त हो जाना।
2. विशेषकर प्रमुख पर्यटन स्थलों पर अव्यवस्थित विकास और निर्माण, पर्यावरण पर एक चुनौती हैं।
3. कंकरीट ढांचों का भयप्रद विकास स्थानीय पर्यावरण के साथ असामंजस्य की स्थिति उत्पन्न हो रही है।
4. पर्यटन के अनैतिक व्यापारीकरण से सामाजिक एवं सांस्कृतिक महत्व समाप्त हो सकता है।
5. प्रमुख पर्यटन राज्यों के बीच उत्साही प्रतियोगिता और अन्य राज्यों द्वारा पर्यटन को प्रभावशाली प्रोत्साहन।
6. विभिन्न सरकारी विभागों द्वारा समन्वित नीतियों में कमी।
7. परिमाण में अत्यधिक वृद्धि एवं मृत्यों में सीमित वृद्धि।
8. अपर्याप्त कूड़ाकंकट/कूड़ाकंकट का निपटान पर्यावरण को चुनौती।

5. योजना :

- 5.1.1 **पर्यटन उपयोजना :** इस तथ्य को नकारा नहीं जा सकता कि पर्यटन विभाग का कुल बजट देश के अन्य पर्यटन आधारित राज्यों के मुकाबले कम है। पर्यटन एक उद्योग है, जिसका सम्बन्ध सभी विकसित विभागों से है। सामान्य कार्यक्रमों के अन्तर्गत पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए ढांचागत मांगों को पूरा करना अपेक्षित है। आवश्यकता इस बात की है कि पर्यटन विभाग की गतिविधियां को यन्त्रीकृत करने एवं तेजी लाने के लिए लोकनिर्माण, शहरी विकास, सिंचाई एवं जनस्वास्थ्य, बागवानी, वन विद्युत आदि विभागों के साथ पूरे रूप से जोड़ना और समन्वित करना होगा। यदि इसे उचित ढंग से समन्वित किया जाए, तो इस के अच्छे परिणाम होंगे और बजट की कमी को पूरा किया जा सकता है। सरकार को धन की व्यवस्था के लिए इस ढंग से पग उठाने होंगे कि पर्यटन से सम्बन्धित विभागों को ऐसी योजनाओं के लिए साधन जुटाने होंगे जो कि मुख्य मन्त्री के स्तर पर पर्यटन विभाग/बोर्ड द्वारा मॉनीटर की जाएगी।

- 5.1.2 उपरोक्त के अतिरिक्त पर्यटन विकास बोर्ड/विभाग एवं जनता द्वारा निजी निवेश को टी. एस. पी. अपने बजट में शामिल करेगा।

- 5.2.1 **ढांचागत विकास :** हिमाचल प्रदेश में मांग अनुसार पर्यटन सम्बन्धी ढांचा मुख्य पर्यटन स्थलों जैसे कि शिमला, मनाली, डलहौजी, मक्लोडगंज, कसौली, चायल में उभर कर आया है। पर्यटकों के तेजी से बढ़ते हुए

आवागमन और इन क्षेत्रों पर होटल आवास के अधिक प्रयोग के कारण नागरिक ढांचों पर भारी बोझ पड़ रहा है। इसलिए राज्य सरकार का उपरोक्त शहरों में नागरिक ढांचों को प्राथमिकता के आधार पर स्तरोन्त करने का प्रस्ताव है। भारत सरकार द्वारा उनकी विभिन्न स्कीमों को दी गई धनराशि को पर्यटन विभाग/पर्यटन विकास बोर्ड द्वारा इन क्षेत्रों को विकसित करने के लिए भी प्रयोग में लाया जाएगा। ढांचे में निजी निवेश का सहृदय स्वागत किया जाएगा। प्राथमिक क्षेत्रों जिनमें पर्वतीय स्थलों, स्पास, आश्रयस्थलों, स्की-स्लोप, हवाई अड्डों, पर्यटक केन्द्रों, विविध पार्किंग क्षेत्रों, मनोरंजन केन्द्रों, मनबहलाव पार्कों, रज्जूमार्ग, गोल्फ कोर्स 4-5 सितारा होटलों, में मानकीकृत राशि वाले आवास आदि शामिल होंगे की स्थापना की जाएगी।

5.2.2 पर्यटन जैसी सेवा में उच्च स्तर की व्यावसायिक सेवाएं देने के लिए कार्यकुशल कर्मों की आवश्यकता है। सरकार मानव संसाधन विकास में निवेश करेगी ताकि प्रबन्धन एवं तकनीकी कार्यकुशलता राज्य में उपलब्ध हो सके। वर्तमान में राज्य में एक भोजन कला संस्थान कुफरी में है। विभाग जिला कांगड़ा और कुल्लू में एक-एक भोजन कला संस्थान खोलने का प्रयास करेगा।

5.3.1 नई विपणन नीति.—राज्य को अन्तरराष्ट्रीय पर्यटन नक्शे पर लाने के लिए और पर्यटकों के आवागमन को बढ़ाने के लिए राज्य की विपणन नीति को सुदृढ़ करने के लिए निम्न कार्यवाही की जाएगी।

1. पर्यटन विकास बोर्ड, प्रमुख मन्दिर ट्रस्ट और निजी क्षेत्र के संयुक्त प्रयत्न से डैस्टीनेशन हिमाचल निधि, को जुटाना।
2. नए विवरणिकाओं, पोस्टरों और अन्य पर्यटन साहित्य का मुद्रण।
3. इलैक्ट्रॉनिक चैनलों पर तथा पर्यटन मेलों/बाजारों में प्रसारण के उद्देश्य से 10 से 20 मिनट की अवधि की पर्यटन फिल्मों को तैयार करना।
4. सूचना केन्द्रों का स्तर ऊंचा करना इन केन्द्रों से न केवल सूचना उपलब्ध होगी बल्कि हिमाचल प्रदेश पर्यटन विकास निगम एवं निजी होटलों में आवास, परिवहन, अमानती सामान कक्ष आदि के आरक्षण के लिए बुकिंग की सुविधा भी उपलब्ध होगी।
5. महत्वपूर्ण अन्तरराष्ट्रीय हवाई अड्डों/राष्ट्रीय हवाई अड्डों और प्रदेश के रेलवे स्टेशनों पर राज्य की पूरी जानकारी के बारे में टच-स्क्रीन स्टैण्ड स्थापित करना।
6. प्रमुख राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय पर्यटन मेलों में भागीदारी। इसमें निजी क्षेत्रों को शामिल करना होगा ताकि एकीकृत हिमाचल गन्तव्य अभियान चलाया जाए।
7. विशेषकर ऑफ सीजन में पर्यटकों को भारी संख्या में आकर्षित करने के लिए राज्य में पर्यटन खेलों की व्यवस्था करना।
8. राज्य के बारे में जैसे की वैबसाइट, ई-मेल, चौबीस घण्टे निःशुल्क पर्यटन सहायता और हैल्पलाइन आदि आधुनिक साधनों से सूचना उपलब्ध करवाना।
9. इलैक्ट्रॉनिक और प्रेस मीडिया से विज्ञापन जारी करना।
10. देश और विदेश के प्रमुख पर्यटन संचालकों की परिचयीकरण व्यवस्था करना।
11. क्रेता-विक्रेता की बैठकों का संचालन करना।
12. व्यवसायिक मार्ग दर्शकों को प्रशिक्षित और प्रोत्साहित करना।
13. राष्ट्रीय तथा राज्य के और महत्वपूर्ण पर्यटन उच्चमार्गों और स्टेशनों पर अन्तरराष्ट्रीय स्तर के प्रतीक चिन्ह स्थापित किए जाएंगे।

- 5.3.2 हिमाचल अपने प्राकृतिक सौन्दर्य के कारण कई चलचित्र निर्माताओं को चलचित्रों और दूरदर्शन धारावाहिक आदि की शूटिंग के लिए आकर्षित करता है। वर्तमान में उन्हें शूटिंग के लिए विभिन्न विभागों से अनुमति प्राप्त करनी पड़ती है। सरकार आयुक्त एवं निदेशक पर्यटन को चलचित्र की शूटिंग के सम्बन्ध में सभी प्रकार की अनुमति के लिए एकमात्र प्राधिकारी घोषित करने का प्रस्ताव रखती है और भविष्य में पर्यटन विभाग द्वारा एकत्रित किया गया शुल्क सम्बन्धित विभाग को दिया जायेगा। इसके अतिरिक्त विभाग चलचित्र शहरों, स्टूडियो और चलचित्र उपकरणों को स्थापित करने के लिए निवेश करने वाले निजी दलों को आमन्त्रित करेगा, जिसके लिए सरकारी भूमि पी0 पी0 पी0 आधार पर उपलब्ध की जा सकती है। हिमाचल में चलचित्र शूटिंग दलों को आकर्षित करने के लिए सकारात्मक सक्रिय कार्यवाही की जाएगी।
- 5.4.1 संपर्क व्यवस्था में सुधार पर्यटन के विकास हेतु सड़क मार्ग, रेल अथवा वायुमार्ग द्वारा संपर्क व्यवस्था आवश्यक है।
- 5.4.2 वर्तमान में राज्य में तीन हवाई अड्डे जुब्बड़हट्टी, भुन्तर और गगल में विद्यमान हैं। अधिक क्षमता वाले वायुयानों की लैंडिंग (पतन) के लिए हवाई अड्डों में और सुधार किया जाएगा। पठानकोट स्थित हवाई अड्डा नागरिकों के लिए खोला जाएगा जहां वायुयान उतरेगा। विशेषकर चम्बा और कांगड़ा के क्षेत्रों में यह राज्य के पर्यटन को बढ़ावा देगा। सुन्दरनगर के समीप अन्तरराष्ट्रीय हवाई अड्डे की स्थापना करने के लिए सरकार पग उठा रही है।
- 5.4.3 जहां सस्ती उड़ानें हिमाचल प्रदेश में न केवल पर्यटन को बढ़ावा देगी बल्कि हवाई कम्पनियों को राज्य में हैली टैक्सी सेवाओं के प्रारम्भ बारे विकास क्षमता का भी अनुमान करवाएगी। हैलीकॉप्टर टैक्सी सेवाएं पर्यटकों की पहुंच हिमाचल प्रदेश के उन भीतरी भागों तक ले जाये जो भौगोलिक और सांस्कृतिक दृष्टि से आकर्षक हैं। राज्य में 55 हैलीपैड हैं जो इन सेवाओं के लिए उपलब्ध है। राज्य सरकार देश के विभिन्न पर्यटन स्थलों से कालका एवं पठानकोट तक अतिरिक्त विशेष रेलगाड़ियां चलाने के लिए प्रयासरत है। समस्त पर्यटन स्थानों तक राष्ट्रीय एवं राज्य उच्चमार्गों के नेटवर्क को सुदृढ़ किया जा रहा है। राज्य सरकार राज्य के अन्दर और राज्य की सीमाओं से बाहर तक सुरक्षित सस्ती एवं सुनिश्चित यातायात सुविधा प्रदान करेगी। राज्य सरकार कर एवं उपस्करों के सरलीकरण हेतु एक प्रणाली निर्धारित करेगी ताकि राज्य में पर्यटकों का आवागमन आबाधित रूप से हो सके।
- 5.5.1 पर्यटन विकास बोर्ड को सशक्त करना : राज्य में पर्यटन उद्योग के विकास और सुधार के लिए तथा राज्य सरकार द्वारा पर्यटन उद्योग में विनियम और अनुज्ञा प्रदान करने के मामलों में परामर्श देने के लिए माननीय मुख्य मन्त्री की अध्यक्षता में पर्यटन विकास बोर्ड की स्थापना की गई है। बोर्ड के संसाधनों की वृद्धि हेतु प्रयत्न किए जाएंगे ताकि बोर्ड विभिन्न विकासात्मक और अन्य पर्यटन को बढ़ावा देने वाले कार्य कर सके। बोर्ड की आय उपभोक्ता प्रभार से पर्यटन विभाग के स्तर पर एकत्रित की जाएगी। पी0 पी0 पी0 परियोजना से आय, पटा राशि और पर्यटन परिषद् आदि से एकत्रित की जाएगी। बोर्ड सामान्यतः अधिगृहित पर्यटन स्थलों में सुधार लाएगा और पर्यटन विभाग और पर्यटन विकास परिषदों को सहायता उपलब्ध करवाएगा।
- 5.5.2 अन्य प्रमुख पर्यटन स्थलों पर मनाली मॉडल के अनुसार हरित/ग्रीन शुल्क एकत्रित किया जाएगा। इस तरह एकत्रित की गई राशि की 10—15 वर्षों में संवीक्षा की जायेगी और आकार अनुसार पर्यटक वृहत योजना समयबद्ध तरीके से बनाई और चलाई जायेगी।
- 5.6.1 निजी क्षेत्रों में निवेश.—निवेशकों को आकर्षित करने के लिए प्रक्रिया को सरल बनाना आवश्यक है, जिससे कि निवेशकों को सुविधा प्राप्त हो, ऐसी परियोजनाएं जहां वन/राजस्व से निकासी आवश्यक है का निश्चित समय प्राथमिकता के आधार पर 90 दिन से अधिक न हो।
- 5.6.2 ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए उद्देश्य से उद्यमियों को प्रोत्साहन देने के लिए पांच कमरों तक की ईकाइयों के लिए विलासकर में छूट दी जाएगी। इसके अतिरिक्त ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यटन परियोजनाओं में

निवेश को प्रोत्साहन देने के लिए बिजली तथा जलप्रभार को भी कम किया जाएगा। यह प्रोत्साहन संप्रवर्तकों को उनकी व्यापारिक कार्य करने की तिथि से 10 वर्षों के लिए उपलब्ध होगा। सरकार परिवहन विभाग के राज्य सड़क कर के आधार पर विलास कर एकत्रित करने के कार्य को पर्यटन विभाग को सौंपने के लिए विचार करेगी। इस तरह विभाग द्वारा एकत्रित की गई निधि बोर्ड के संसाधनों का एक भाग होगा।

5.6.3 पर्यटन परियोजनाओं के लिए एकल खिड़की निपटान व्यवस्था विभाग में लागू एकल पद्धति के आधार पर ही तैयार की जाएगी। राज्य में उपयुक्त सरकारी भूमि या भूमि बैंक के माध्यम से अथवा राज्य में अन्यथा उपलब्ध हो को पर्यटन विभाग को हस्तान्तरित की जाएगी। जिसे निजी उद्यमियों को सख्ती से बोली लगाने की प्रतियोगिता के आधार पर भविष्य में पट्टे पर आबंटित किया जाएगा।

5.7.1 प्रभाव विनियम.—राज्य सरकार ने हिमाचल प्रदेश पंजीकरण पर्यटक ट्रेड अधिनियम, 2002 पारित किया है यह होटलों के निरीक्षण एवं जांच यात्रा एजेंसियों के अतिप्रभार के विरुद्ध, घटिया सेवा आदि के लिए होगा। सरकार उक्त अधिनियम के माध्यम से निरीक्षण कार्य को कार्यान्वित करने तथा उसमें होटल संस्थानों को भी शामिल करने का प्रस्ताव करती है।

5.7.2 राज्य में पर्यटन पुलिस को सुदृढ़ करने की धारणा से 500 पुलिस कर्मी एवं कार्मिक गृहसूक्ष्मों में से तैनात किया जाएगा जिन्हें पर्यटन सम्बन्धी गतिविधियों को विनियमित करने के लिए प्रशिक्षित किया जाएगा। उन्हें विशेष वर्दी/पहचान चिन्ह उपलब्ध करवाया जाएगा और वह पर्यटकों को सहयोग देंगे।

5.7.3 पर्यटक सूचना केन्द्रों को पर्यटन विभाग/पर्यटन विकास बोर्ड के अलावा होटल प्रबन्धन संस्थान और एम. टी. ए. (विश्वविद्यालय) द्वारा संचालित किया जाएगा।

5.7.4 राज्य सरकार समुचित स्वास्थ्यात्मक स्थिति को सुरक्षित रखने तथा राष्ट्रीय एवं राज्य उच्चमार्गों और पर्यटन स्थलों पर पर्यटकों के शोषण को रोकने के लिए पग उठाएगी। सरकार का राष्ट्रीय एवं उच्च मार्गों पर स्थित ढाबों के वर्गीकरण का प्रस्ताव है। वर्गीकरण सुविधाओं यथा स्वास्थ्यात्मक स्थिति भोजन की गुणवत्ता, शौचालयों की उपलब्धता पार्किंग सुविधाओं के आधार पर किया जाएगा। सरकार इन ढाबों में विभिन्न देशीय हिमाचली पाकशालाओं को प्रोत्साहित करेगी।

5.7.5 इसी प्रकार राज्य में समस्त पर्यटन इकाइयों को सुविधाएं उपलब्ध करवाने के लिए वर्गीकृत किया जाएगा ताकि पर्यटक अपने पैसों की वसूली कर सकें। होटल संस्थाओं को सक्रियता से शामिल किया जाएगा।

5.7.6 पर्यटन क्षेत्र विशिष्ट प्रोत्साहन देने हेतु सरकारी संस्थाओं और वैयक्तिक को पर्यटन के विभिन्न क्षेत्रों जैसे कि आवास, भोजन प्रबन्ध, परिवहन, यात्रा एजेंसी, इकोमैत्री स्वच्छता आदि में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए वित्तीय/अवित्तीय सम्मान स्थापित करेगी। यह योजना राज्यस्तरीय समिति जिसमें कि विशेषज्ञ, पर्यटन व्यावसाय जुड़े प्रतिनिधि और सरकारी अधिकारी होंगे द्वारा संचालित की जाएगी।

6. महत्वपूर्ण क्षेत्र :

उपर्युक्त निर्दिष्ट नीतिगत उद्देश्यों की प्राप्ति के निमित्त विभाग/परिषद् द्वारा कार्य निष्पादन तथा अनुपरीक्षण के लिए महत्वपूर्ण क्षेत्रों की पहचान की गई जिनमें से कुछ निम्न है :—

6.1 ग्रामीण पर्यटन:—

6.1.1 पर्यटन का प्रभाव आवश्यक रूप से, ग्रामीण क्षेत्रों तक होना चाहिए ताकि यह वास्तविक रूप से स्थाई एवं उत्तरदायी बन सके। इसके लिए विभाग/परिषद् निम्न प्रस्ताव करते हैं :—

* विभाग द्वारा ग्रामीण पर्यटन गांवों की पहचान एवं अधिसूचना।

* इन्हें पर्यटन गांव घोषित करते समय यह पूर्व शर्त होगी कि इनमें आवश्यक रूप से प्रचुर पारम्परिक स्थापत्यकला हो और यह प्रतिपालनीय होगी, इस आशय का लिखित समझौता पंचायत प्रधान के

साथ किया जाएगा। ग्रामीण अपने घरों को आन्तरिक रूप में परिवर्तन में ला सकेंगे परन्तु वे उनके वाह्य स्वरूप को यथावत बनाए रखेंगे।

- * सरल विपणन की दृष्टि से इन गावों का वर्तमान पर्यटन केन्द्रों के निकट होना आवश्यक होगा जिससे पर्यटकों का आसानी से ग्रामीण क्षेत्रों में आना जाना हो सके और भीड़-भाड़ कम करने में सहायक हो।
- * इन्हें भारत सरकार की योजना से जोड़ा जाएगा जिसके लिए 5 लाख रुपये तक की धनराशि उपलब्ध होगी उसका उपयोग सड़क, गलियों, नालियों प्रकाश व्यवस्था, वाहन खड़े करने के स्थानों, बस ठहराव, जलापूर्ति, सफाई व्यवस्था, पर्यटन स्वागत केन्द्र ग्रामीण संग्रहालय, खुले मंच, उपवन, प्राकृतिक अनुचिन्ह, हस्तशिल्प बाजार आदि ढांचागत संरचना के निर्माण में किया जाएगा। इसके लिए धनराशि की व्यवस्था विभाग/परिषद् की निधि में से भी की जा सकेगी।
- * इन अधिसूचित गांवों में 5 घरेलू शयन कक्षों तक कोई विलासकर अथवा व्यावसायिक विद्युत दरें लागू नहीं होंगी।
- * विभाग की वर्तमान योजनाओं पर पुनर्विचार किया जाएगा और समाज के कमजोर वर्गों को घरेलू स्थानों के पुनरुद्धार के लिए अनुदान/ऋण लेने के निमित्त धन का प्रावधान करने का प्रयास किया जाएगा। ग्रामीण विकास विभाग तथा राष्ट्रीयकृत बैंक इस कार्य में सहयोग हेतु सक्रिय पग उठाएंगे।
- * सरकार का यह प्रस्ताव है कि इन घरेलू बसेरों में हिमाचली/स्थानीय भोजन परोसा जाए।
- * स्थानीय हस्तशिल्प एवं सांस्कृतिक दलों के आपसी तालमेल की अपेक्षा की जाएगी।
- * ग्रामीण पर्यटन अतिथिगृह के पंजीकरण की प्रणाली को सरल किया जाएगा और उपलब्ध सुविधाओं का पर्याप्त प्रचार प्रसार किया जाएगा।
- * उपर्युक्त योजना धरोहर और उद्यान पर्यटन के लिए भी यथावत लागू होगी।

6.1.2 राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में अनगणित प्राचीन स्थल किले, हवेलियां तथा सुन्दर इमारतें हैं जिन्हें यदि विधिवत रूप से विकसित किया जाए तो वे अपने आप में महत्वपूर्ण पर्यटक आकर्षण स्थल बन सकेंगे। सरकार ऐसे स्थलों को पर्यटक आवास के रूप में विकसित करने को प्रोत्साहित करेगी तथा ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित ऐसे नवधरोहर होटलों को पांच वर्ष की अवधि तक बिलास-कर से मुक्त रखा जाएगा। ऐसे स्थलों के विकास हेतु सरकार भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण और निजी क्षेत्रों को सहयोजित करने का प्रयास करेगी।

6.1.3 शिमला अंग्रेजी शासन, स्वाधीनता आन्दोलन तथा 'शिमला समझौते' जैसी कुछ हाल की घटनाओं से सम्बद्ध स्मृतियां को ताजा करता है। अंग्रेजी शासन काल के स्मारकीय साक्ष्यों के रूप में 'वाईसरीगल लाज', जिसमें अब भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान स्थित है, गेयटी प्रकाशगृह तथा सौ से अधिक धरोहर भवन हैं। पर्यटन विभाग/परिषद् गिरिजाघरों और कब्रिस्तानों सहित इन धरोहर भवनों के परिरक्षण का प्रयास करेगा और उपनिवेशिक और स्वतंत्रता आन्दोलन काल से जुड़े गृह स्मारक पर्यटन को प्रोत्साहन देने का प्रयास करेगा।

6.1.4 सेब और उद्यान क्षेत्र में भी ध्यान केन्द्रित किया जाना आवश्यक है क्योंकि शिमला किन्नौर कुल्लू और मण्डी जिला के कुछ क्षेत्रों के पारम्परिक फार्म हाऊसों को बसेरों में परिवर्तित किया जा सकता है जिनमें पर्यटक सेब की पुष्पित होने से लेकर फसल कटने तक की सुन्दरता का आनन्द उठा सके।

6.1.5 हर वर्ष आयोजित किए जाने वाले सेब उत्सव को उद्यान विभाग और होटल संघ की सक्रिय भागेदारी के साथ जारी रखा जाएगा।

6.1.6 विभाग/परिषद् जलग्रहण/मध्य हिमाचल जलग्रहण विकास परियोजना जैसी रोजगार से जुड़ी परियोजना, जिनका वित्त पोषण विश्व बैंक से होता है, से सहयोजन करेगा ताकि ग्रामीण परिस्थितिक पर्यटन को इन परियोजना क्षेत्रों तक बढ़ाया जा सके।

6.2 पर्यावरण मित्र पर्यटन :

- 6.2.1 हिमाचल प्रकृति के आनन्द और उसे जानने का अवसर प्रस्तुत कर रहा है। यहां पर्यटकों का शीतोष्ण वनों से सीधा साक्षात्कार होता है वनयात्रा, निपथ यात्रा, शिलारोहण, अरण्य पगडंडी भ्रमण, प्राकृतिक वातावरण में भ्रमण, मच्छली पकड़ना (विशेषकर गोल्डन महाशीर और भूरी ट्राऊट) पड़ाव ठहराव आदि पर्यावरण मित्र पर्यटन गतिविधियों के विकास की दिशा में आदर्श क्षेत्र हैं। इन समस्त गतिविधियों का संचालन इस प्रकार किया जाएगा जिससे पर्यावरण विषयक जागरूकता को प्रोत्साहन मिले और परिस्थितिक संतुलन बनाए रखने में सहायक सिद्ध हो ।
- 6.2.2 पर्यावरण मित्र पर्यटन योजनाएं अधिकांशतः वन भूमि पर हैं जो तकनीकी दृष्टि से वन विभाग के अधीन हैं जिन्होंने पहले ही पर्यटन विभाग से विचार-विमर्श कर पर्यावरण मित्र पर्यटन नीति तैयार की हैं इसके अन्तर्गत ग्रेट हिमालयन नेशनल पार्क (कुल्लू), हिमालयन नेचर पार्क (शिमला), रेणुका अभ्यरण (सिरमौर), पोटरज हिल वन विहार (शिमला) को सभाविष्ट करने के निमित्त समुदाय आधारित पर्यावरण मित्र पर्यटन के आधार पर पर्यावरण मित्र पर्यटन समिति का गठन कर दिया गया है।
- 6.2.3 मूल ढांचागत सुविधाओं तथा अन्य जनसुविधात्मक सेवाओं सहित, पड़ावस्थलों के विकास कर सरकार राज्य में वनों की पर्यटन क्षमता का दोहन करेगी। सरकार द्वारा इन पड़ावस्थलों के प्रयोग के लिए नाम मात्र शुल्क निर्धारित करेगी। जिससे इनका रख-रखाव और सम्बन्धित वनों का संरक्षण किया जा सके। निजी क्षेत्रों को इन पड़ावस्थलों की पर्यावरण मैत्री आधार पर स्थापना के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा। सरकार पर्यटकों के लिए समिति के माध्यम से वन विश्राम गृह बनाने का प्रयास करेगी। इन का संचालन समुदाय आधारित पर्यावरण मित्र पर्यटन तम्बुओं अथवा पर्यावरण मित्र पर्यटन क्षेत्र में उत्कृष्ट गतिविधि वाली निजी कम्पनी के साथ जन भागीदारी से किया जाएगा।
- 6.2.4 वन्यप्राणी पर्यटन पर्यावरण मित्र पर्यटन का एक भाग है हिमाचल प्रदेश का भौगोलिक परिदृश्य, जलवायु और वन क्षेत्र विविधतापूर्ण है और नाना प्रकार की वनस्पतियों और जीव-जन्तुओं से सम्पन्न हैं। वर्तमान में 32 अभ्यारण्य, 2 राष्ट्रीय उद्यान और 3 क्रीड़ा परिरक्षित क्षेत्र हैं। अभ्यारण्यों में सिम्बलवाड़ा (सिरमौर) चूड़धोर, चायल (सोलन), महाराणा प्रताप सागर (कांगड़ा), मनाली (कुल्लू), कालाटॉप खजियार (चम्बा) तथा दारंगढाटी (शिमला) है। राष्ट्रीय उद्यानों में पिन वैली राष्ट्रीय उद्यान स्पिति, ग्रेट हिमालयन राष्ट्रीय उद्यान कुल्लू हैं। प्रकृति उद्यानों में कुफरी (शिमला) मनाली (कुल्लू) और गोपालपुर (कांगड़ा) है। पर्यटन विभाग का वन विभाग के वन्यप्राणी विभाग के साथ पर्यटकों की सुविधा हेतु वन्यप्राणी उद्यानों/चिड़ियाघरों, पक्षीदर्शन मीनारों एवं अन्य जन उपयोगी सेवाओं के विकास एवं सुधार के लिए सक्रियतापूर्वक कार्य करने का प्रस्ताव है। इन उद्यानों चिड़ियाघरों के प्रयोग हेतु सरकार द्वारा न्यायोचित शुल्क रखा जाएगा जिससे इनका रख रखाव किया जा सके।
- 6.2.5 झीलों और आर्द्र भूमि का विकास भी पर्यावरण मित्र पर्यटन का एक भाग है। राज्य सरकार प्राकृतिक एवं कृत्रिम झीलों को पर्यटकों का महत्वपूर्ण गन्तव्यस्थल बनाने के लिए विशेष प्रयत्न करेगी। एकीकृत विकास के द्वारा उनके सौंदर्य को बनाए रखने एवं बढ़ाने के लिए विशेष पग उठाए जाएंगे। महाराणा प्रताप सागर चमेरा और गोविन्द सागर में जलक्रीड़ा सुविधाओं का विकास कर उन्हें अन्तरराष्ट्रीय स्तर दिया जाएगा और इन स्थलों की प्रसिद्धि के लिए राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय खेलों का आयोजन भी किया जाएगा। महाराणा प्रताप सागर को भारत सरकार की वित्तीय सहायता द्वारा विश्वस्तरीय जलक्रीड़ा स्थल के रूप में विकसित किया जाएगा ताकि जलक्रीड़ा मछली पकड़ने, पक्षी दर्शन, हाऊस बोट स्थापित करने तथा कृत्रिम बालुतट विकास आदि क्रीड़ा-कलाप शुरू किए जा सकें। सरकार महाराणा प्रताप सागर में हाऊस बोट स्थापित करने

और शिकारों के संचालन के लिए निजी क्षेत्र को भी प्रोत्साहन देगी। इन क्षेत्रों के वन विश्राम गृहों में भी सुधार किया जाएगा और उन्हें पर्यटकों को आवास सुविधा के लिए उपलब्ध करवाया जाएगा।

6.3 तीर्थ स्थल पर्यटन :

- 6.3.1 हिमाचल प्रदेश एक महत्वपूर्ण तीर्थयात्रा स्थल के रूप में उभरा है। हर वर्ष तीर्थयात्री पर्यटक बड़ी संख्या में हिमाचल के पवित्र स्थलों पर आते हैं। राज्य में लगभग समस्त धर्मों के लोगों के लिए बहुत से धार्मिक स्थल स्थित हैं। राज्य सरकार का सड़क किनारे/नागरिक सुविधाएं, वाहन पार्किंग, प्रकृति दृश्य मंदिर न्यासों के सहयोजन से मंदिर परिसर का सौंदर्यकरण, सुलभ शौचालय, पीने का पानी, कूड़ा निस्तारण आदि की व्यावस्था, वैष्णो देवी न्यास के अनुरूप विकसित करने का प्रस्ताव है। महत्वपूर्ण पर्वों पर पर्यटकों की सुरक्षा हेतु सूचना केन्द्र, पर्यटकों को आवास सुविधा उपलब्ध करवाने के लिए तम्बू कलोनी स्थापित करना और विशेष पर्यटन पुलिस तैनात करने जैसे विशेष प्रबन्ध वैष्णो देवी की प्रणाली के अनुसार किए जाएंगे।
- 6.3.2 एक सुनियोजित योजना के अन्तर्गत विभाग/बोर्ड हिमाचल प्रदेश के महत्वपूर्ण मंदिरों को जम्मू कश्मीर के वैष्णो देवी अथवा उत्तरांचल के चार धाम से संघटित करने का प्रयास करेगा।
- 6.3.3 पर्यटन विभाग/बोर्ड भाषा एवं संस्कृति विभाग तथा मन्दिर न्यासों के सहयोग से कार्य करेगा ताकि सभी मुख्य मन्दिरों में पर्यटक सूचना केन्द्रों की स्थापना की जा सकें तथा उन्हीं के द्वारा संचालन भी किया जा सके।

6.4. साहसिक पर्यटन :

- 6.4.1 पर्यटन विभाग/बोर्ड प्रदेश के लिए एक व्यापक पर्यटन संवर्द्धन योजना और सुरक्षा मापदण्ड लागू करने के लिए विनियमन ढांचा बनाएगा। साहसिक खेलों को बढ़ावा देने के लिए विभाग/बोर्ड युवाओं को विभिन्न खेलों का प्रशिक्षण देगा। ऐसे खेलों के प्रति खेल विभाग के सहयोजन से न केवल देश भर से अपितु विदेशों से भी प्रतिभागियों को आकर्षित करने के लिए अन्तरराष्ट्रीय प्रतियोगिताएं आयोजित की जाएंगी।
- 6.4.2 पर्यटन विभाग/बोर्ड अधिक से अधिक युवाओं को पैराग्लाइडिंग, राफ्टिंग, जलक्रीड़ा मछली पकड़ने, स्कींग, पर्वतारोहण, मोटर खेलों में प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए वैस्टर्न हिमालयन पर्वतारोहण संस्थान, मनाली एवं राज्य स्तरीय समितियों के सहयोजन से विभिन्न स्थानों पर साहसिक खेल स्थल स्थापित करने की दिशा में किए गये समस्त प्रयासों की संवीक्षा करेगा। विभाग/बोर्ड पश्चिमी हिमालयी पर्वतारोहण संस्थान को राज्य में अद्यतन अचिन्हित स्थानों तक साहसिक पर्यटन को पहुंचाने के लिए अधिक उपकेन्द्र स्थापित करने में सहायता करेगा। यह स्थानीय युवाओं को प्रशिक्षित करने में सहायता करेगा जिससे उनको रोजगार एवं अन्य प्रकार से लाभ प्राप्त हो सके। इसी प्रकार उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु विभाग/बोर्ड वन विभाग और पर्यावरण मित्र पर्यटन समितियों के साथ मिलकर कार्य करेगा।
- 6.4.3 हिमाचल प्रदेश देश भर में हैली स्कींग में प्रथम था और आज भी केवल एक ऐसा प्रदेश है जहां हैली स्कींग होती है। यह विदेशियों और उच्च कोटि के क्षमतावान पर्यटकों को विश्व भर में उपलब्ध कुछ गिने चुने सूखे बर्फ स्थलों की ओर आकर्षित करता है वनस्पति और पर्यावरण को क्षति पहुंचने के प्रारम्भिक अंशों के बावजूद इस उद्यम का अनुभव बहुत सकारात्मक रहा। हैली स्कींग की परिकल्पना को हैली ट्रैकिंग और लम्बी दूरी की स्कींग आदि कार्यकलापों के द्वारा विस्तारित करने का प्रस्ताव है।
- 6.4.4 लोक एवं निजी भागेदारी में पारम्पारिक स्कींग और अतिरिक्त स्की लिफ्ट तथा आश्रय स्थल स्थापित करने पर विशेष बल दिया जाएगा। रोहडू से आगे चांशल शिखर पर ऐसी प्रबल संभावनाएं हैं जिसका विशेष रूप से अन्वेषण किया जाएगा।
- 6.4.5 प्रदेश में 1984 से पैराग्लाइडिंग को बढ़ावा देना प्रारम्भ किया। अब हिमाचल प्रदेश इस क्षेत्र में देश का अग्रणी राज्य है। कांगड़ा का बीड़ बिल्लिंग, कुल्लू के सोलंग और मदी तथा बिलासपुर, कसौली आदि खेल के

महत्वपूर्ण केन्द्रों के रूप में बने रहेंगे। स्थानीय युवाओं की आजीविका का साधन बनाने के उद्देश्य से अतिरिक्त क्षेत्र अन्वेषित कर विकसित किये जाएंगे। बीड़ बिलिंग में होने वाली पूर्व विश्व कप स्पर्धा वार्षिक आयोजन के रूप में चालू रहेगी। डेलू में एक पैराग्लाइडिंग स्कूल खोला जाएगा। बीड़ बिलिंग को स्थानीय समुदाय को लाभान्वित करते हुए, स्ववित्त पोषित आधार पर आगामी वर्षों में अन्तरराष्ट्रीय स्तर के पैराग्लाइडिंग के रूप में विकसित किया जाएगा।

- 6.4.6 पर्यटन विभाग पश्चिमी हिमालयन पर्वतारोहण संस्थान एवं अन्य साहसिक खेल संचालकों के साथ मिल कर अन्तरराष्ट्रीय पर्वतारोहण अभियानों को प्रोत्साहन देगा। इसी प्रकार विद्यालयों और महाविद्यालयों के छात्रों के लिए पैमाने पर पश्चिमी हिमालयन पर्वतारोहण संस्थान के माध्यम से ट्रेकिंग और साहसिक खेल गतिविधियां निरंतर चालू रखी जाएंगी।
- 6.4.7 विभाग/बोर्ड सम्बन्धित समितियों के माध्यम से साहसिक खेल गतिविधियां जैसे— पैराग्लाइडिंग, नदी बेड़ा खेवन, नौकायन, पहाड़ों में दुपहिया वाहन चालन, क्षमतापूरक प्रतिस्पर्धाएं, लम्बी दौड़, वाहन चालन प्रतिस्पर्धाएं, विटेंज कार रैली (द्विवार्षिक) आदि अधिकाधिक वार्षिक प्रतिस्पर्धाएं आयोजित करना जारी रखेगा। इसका उद्देश्य यह रहेगा कि ये समस्त प्रतिस्पर्धाएं, अपने-अपने समय पर स्वतः निरंतरता के आधार पर चलती रहें।
- 6.4.8 साहसिक खेल क्षेत्र में प्रमुख उद्देश्यों में से एक यह रहेगा कि चाहे स्कींग, रज्जुमार्ग परियोजनाएं, जलक्रीड़ा हो अथवा पैराग्लाइडिंग, इस क्षेत्र में उपकरणों और परिज्ञान के रूप में अद्यतन तकनीक उपलब्ध की जाए साहसिक पर्यटन के इस क्षेत्र में समस्त प्रस्तावित परियोजनाओं की यह आवश्यक पूर्वशर्त होगी।

6.5 अविकसित हिमाचल क्षेत्र का विकास :

- 6.5.1 हिमाचल प्रदेश के मुख्य पर्यटन क्षेत्र भली भांति ज्ञात हैं। लाहौल—स्पिति एवं किन्नौर जैसे दूर—दराज के जिले भी विश्राम एवं तनाव मुक्ति की दृष्टि से अब प्रसिद्ध स्थल बन रहे हैं। हिमाचल में ऐसे भी बहुत से स्थल हैं जो अभी अछूते हैं और जिनका सौंदर्य अभी यथावत है। वे भीड़—भाड़ से दूर प्रकृति की भव्यता के बीच अवकाश का सर्वोत्तम आनन्द प्राप्त करने के लिए उपयुक्त स्थल हैं। राज्य सरकार केन्द्र सरकार की सहायता से इन अछूते स्थलों को विकसित करने के लिए विशेष पग उठाएगी ताकि सफाई, सड़कें, वाहन पार्किंग, शौचालय, आवास पर्यटक स्थलों के सौंदर्यकरण और प्रकृति दृश्य निर्माण सड़क किनारे सुविधाओं आदि में सुधार किया जा सके। ऐसे प्रयास किए जाएंगे जिससे इन नव विकसित क्षेत्रों को साफ—सुथरा रखा जाए और केवल सीमित निर्माण की ही आज्ञा दी जाएगी ताकि ये स्थल भीड़—भाड़ युक्त न हो जाएं और जिन निर्माणों को अनुमति दी जाएगी उनसे राज्य के वास्तुशिल्प और पारिस्थितिकीय परिवेश का संरक्षण सुनिश्चित हो। इनमें से कुछ क्षेत्र हैं :—

- * लाहौल—
- * स्पिति
- * किन्नौर
- * जंजैहली
- * चम्बा जोत
- * राजगढ़ और चूड़ (चूड़धार)
- * नाहन
- * चिण्डी बरोट झटींगरी
- * रोहडू चांशल
- * सराहन और बशाल धार

- 6.5.2 जब से हिमाचल प्रदेश के जन जातीय क्षेत्रों को विदेशियों के लिए खोला गया है तब से इन क्षेत्रों में आने वाले विदेशी और घरेलू सैलानियों की संख्या में कई गुणा वृद्धि है। लाहौल-स्पीति और किन्नौर महत्वपूर्ण पर्यटन स्थलों के रूप में उभरे हैं तथापि कुल क्षमता के दृष्टिगत यह लेश मात्र है। इन क्षेत्रों का सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्ध होने के कारण ऐसे प्रयास किए जाएंगे ताकि सांस्कृतिक दृष्टि से सजग ऐसे पर्यटकों को आमन्त्रित किया जाए जो चिंतन कर सकें और वैमन्य का आनन्द उठा सकते हों इसलिए इन क्षेत्रों की अनुपम संस्कृति का संरक्षण सरकार की प्राथमिकता में रहेगा। सरकार केवल ऐसे निर्माणों की ही अनुमति देगी जिससे इन क्षेत्रों के वास्तुशिल्प और पर्यावरण का संरक्षण हो। निजी क्षेत्रों को अतिथिगृह बनाने के लिए सरकार प्रोत्साहन जारी रखेगी जिसके लिए राज्य बजट से उपदान दिया जाएगा। स्थानीय भागीदारी से तम्बु आवास व्यवस्था को प्रोत्साहित किया जाएगा ताकि स्थानीय आर्थिकी को अधिकतम लाभ पहुंच सके। शताब्दियों पुराने बौद्ध मठों का सुदृढीकरण किया जा रहा है जहां विदेशी पर्यटक रुचि दिखाते हैं।
- 6.5.3 पर्यटन अधिनियम 2000 के अन्तर्गत इन क्षेत्रों में पर्यटन बोर्ड का गठन किया जाएगा ताकि ट्रेकरज/पर्यटकों से कुछ शुल्क लिया जाए जिससे प्राप्त आय को स्थानीय पंचायतों को पर्यटन सम्बन्धी ढांचे के रख रखाव एवं परिवर्द्धन के लिए दिया जाएगा ताकि वे पर्यटन सम्बन्धी गतिविधियां निरंतर चलाए रखें।
- 6.5.4 विभाग जनजातीय/सीमांत क्षेत्रों को खोलने के प्रयास करेगा ताकि वर्तमान में भीतरी क्षेत्रों की यात्रा पर लगे प्रतिबंध को हटाया जा सके।
- 6.5.5 मनाली लेह मार्ग जो अन्तरराष्ट्रीय और घरेलू पर्यटकों का प्रिय मार्ग बन चुका है में, जम्मू-कश्मीर सरकार के सहयोजन से और अधिक सुधार लाया जाएगा। इसे शिमला किन्नौर-स्पीति-उदयपुर-पांगी और पालमपुर-धर्मशाला-डलहौजी वाले बौद्ध परिसर से जुड़ने के प्रयास किए जाएंगे।

6.6 स्वास्थ्य सम्बन्धी पर्यटन :

6.6.1 स्वास्थ्य सुविधा पर्यटन : पूरे प्रदेश में मालिश, स्वास्थ्य आश्रय नीरोग्य केन्द्र आदि स्थापित करने के लिए बृहद आयाम है। हिमाचल में औषधीय पौधों के विपुल भण्डार हैं। पर्यटकों के आकर्षण हेतु औषधीय बाग, औषधीय ट्रेल स्थापित किए जाएंगे। वन, आयुर्वेद विभाग तथा भारतीय चिकित्सा पद्धति के संयुक्त तत्वाधान में पर्यटन विभाग/बोर्ड ऐसी यात्राएं आयोजित करेगा जिससे आगे स्कूली बच्चों और पर्यटकों में औषधीय पौधों के सम्बन्ध में जागृति एवं रुचि विकसित होगी।

6.6.2 सरकार प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में निजी क्षेत्र के सहयोग से मालिश/स्वास्थ्य आश्रय स्थल विकसित करना प्रस्तावित करती है। सरकार पंचकर्मा की गुणवत्ता का दोहन भी करेगी तथा राज्य में पंचकर्मा चिकित्सा के लिए बड़ी संख्या में पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए इसे संचालित करेगा। पंचकर्मा का युवाओं से प्रशिक्षण आयुर्वेद विभाग के माध्यम से दिलाया जायेगा जिन्हें बाद में मालिश एवं स्वास्थ्य आश्रय स्थानों में नियुक्त किया जाएगा।

6.7 कला शिल्प एवं स्मारिकाएं :

6.7.1 स्थानीय कला और संस्कृति का विकास एवं रोजगार के लिए आय पैदा करना जो पर्यटन नीति का मुख्य घटक है। राज्य सरकार स्मारिका उद्योग के विकास को प्रोत्साहित करेगी जो स्थानीय शिल्प आयोजन तथा स्थानों से जुड़े हैं जिससे प्रदेश के बाहर तथा भीतर राज्य की वैमन्य पूर्ण छवि विकसित होगी। आने वाले पर्यटकों हेतु स्थानीय लोक संस्कृति और शिल्प के संरक्षण एवं बढ़ावा देने हेतु निजी क्षेत्र को प्रोत्साहित किया जाएगा।

- 6.7.2 स्तरीय पैकेज सहित स्मारिका तैयार करने का कार्य बहुत महत्वपूर्ण है जिसके लिए एन. आई. डी., एन. आई. एफ. टी., आरोविलो, टिलोनिया इत्यादि प्रमुख संस्थाओं तथा सवैच्छिक संगठनों की सेवाएं ली जाएंगी।

अनुबन्ध : (कार्य योजना)

अल्प एवं मध्यम अवधि (2 से 5 वर्ष) :

क्रम सं०	उद्देश्य	नीति	कार्य योजना
1.	(क) हिमाचल को देश तथा विदेश में अग्रणी पर्यटन गंतव्य/स्थल स्थापित करना।	(क) हिमाचल प्रदेश का ब्रांड प्रतीक एवं प्रचार नीति।	<ol style="list-style-type: none"> (1) उचित ब्रांड प्रतीक एवं प्रचार नीति को बनाए रखने के लिए अगले छः माह के भीतर देश के प्रमुख परामर्शदाताओं की सेवाएं प्राप्त करना। (2) ब्रांड प्रतीक एवं प्रचार अभियान को बढ़ावा देने के लिए समस्त पणधारियों के सहयोजन में 'डेस्टीनेशन हिमाचल कोष' सृजित करना। (3) निजी होटलों के लिए बुकिंग द्वारा तथा पर्यटन बोर्ड के माध्यम से देश के समस्त पर्यटक सूचना केन्द्रों को मजबूत बनाना तथा संसाधन जुटाना। (4) निजी साझेदारी द्वारा ऑन लाईन पद्धति। (5) प्रमुख राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय व्यापार मेलों में भागीदारी। (6) पर्यटन से सम्बन्धित अद्यतन साहित्य तथा इनकी समुचित उपलब्धता सुनिश्चित करना। (7) हिमाचल को वस्तु स्थिति दर्शाने हेतु विदेशों में स्थित भारत सरकार के कार्यालयों के साथ सक्रिय तथा निरन्तर सम्पर्क बनाए रखना। (8) पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए प्रमुख राज्यों तथा देशों के साथ एम. ओ. यू. एस तैयार करना। (9) हि० प्र० को हिमालयन पर्वतों के माध्यम से बढ़ावा देने तथा विश्व स्तर पर इस का ब्रांड प्रतीक बनाना।
	(ख) अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर पर्यटन सम्बन्धी ढांचे का स्तर बढ़ाना।		<ol style="list-style-type: none"> (1) जन निजी साझेदारी को परम प्राथमिकता देना। (2) अन्तरराष्ट्रीय तथा प्रतिष्ठित राष्ट्रीय कम्पनियों का सहयोजन जो विश्व स्तर के प्रौद्योगिकी के सम्बन्ध में जानकारी उपलब्ध करा सकें तथा पर्यटन ढांचे को सुधारने की विशेषज्ञता रखते हों। (3) भारत सरकार के पर्यटन मन्त्रालय से विभिन्न स्कीमों जैसे सफ़्टिस, गन्तव्य, प्रचुर मात्रा में आय उत्पन्न करने वाली परियोजनाओं, ग्रामीण पर्यटन आदि के अन्तर्गत अधिकतम वित्तीय सहायता लेने की कोशिश करना।

क्रम सं०	उद्देश्य	नीति	कार्य योजना
1			<p>(4) राज्य में एक पर्यटन उपयोजना तैयार करना ताकि राज्य स्तर पर (सड़क, मल-प्रवाह, बिजली, यातायात, दूरभाष आदि) निधिकरण का समाकलन तथा मानीटर प्रभावी ढंग से किया जा सके।</p> <p>(5) हवाई अड्डों के विस्तार कार्य के लिए सक्रियता से लगे रहना ताकि बड़े-बड़े विमान उतर सकें।</p> <p>(6) दूरस्थ तथा स्थल रुद्ध क्षेत्रों तक सुखद पहुंच हेतु हेलीकाप्टरों के प्रयोग को बढ़ाना।</p> <p>(7) प्रमुख स्थलों पर चार/पांच सितारा होटलों को स्थापित करना।</p> <p>(8) बजट समायोजन हेतु अधिकतर दो/तीन सितारा होटलों का बनाना।</p> <p>(9) युवाओं के लिए अधिकाधिक छात्रावासों का निर्माण करना।</p>
2.	राज्य में पर्यटन को आर्थिक वृद्धि का प्रमुख ईंजन तथा रोजगार उपलब्ध करवाने के लिए साधन बनाना।	(क) बाहरी निवेश को आकर्षित करना।	<p>(1) भारत सरकार के प्रोत्साहन पैकेज जिनमें उत्पादन शुल्क तथा आयकर छूट शामिल हो, का पूर्ण लाभ उठाना।</p> <p>(2) जन निजी सांझेदारियों को परम प्राथमिकता देना।</p> <p>(3) अन्तराष्ट्रीय तथा प्रतिष्ठित राष्ट्रीय कम्पनियों का सहयोजन जो विश्व स्तर के प्रौद्योगिकी के सम्बन्ध में जानकारी उपलब्ध करा सके तथा पर्यटन ढांचे को सुधारने की विशेषज्ञता रखते हों।</p> <p>(4) भारत सरकार की पर्यटन मन्त्रालय से विभिन्न स्कीमों जैसे सर्किट्स, गन्तव्य, प्रचुर मात्रा में आय उत्पन्न करने वाली परियोजनाओं, ग्रामीण पर्यटन आदि के लिए निधिकरण के अन्तर्गत अधिकतम सहायता लेने की कोशिश करना।</p> <p>(5) हवाई अड्डों के विस्तार कार्य के लिए सक्रियता से लगे रहना ताकि बड़े-बड़े विमान उतर सकें।</p> <p>(6) दूरस्थ तथा स्थल-रुद्ध क्षेत्रों तक सुखद पहुंच हेतु हेलीकाप्टर के प्रयोग को बढ़ाना।</p> <p>(7) प्रमुख गंतव्य पर चार/पांच सितारा होटलों को स्थापित करना।</p>

क्रम सं०	उद्देश्य	नीति	कार्य योजना
			<p>(8) बजट समायोजन हेतु अधिकतर दो/तीन सितारा होटलों का बनाना।</p> <p>(9) स्तरीय सेवा उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से राज्य में होटलों का वर्गीकरण करना।</p> <p>(10) नए पर्वतीय केन्द्रों, जल-स्थल सम्बन्धी आश्रय स्थलों रज्जुमार्ग सहित स्की आश्रय स्थलों, सपास, ईको पर्यटन सम्बन्धी परियोजनाओं को स्थापित करने के लिए एफ.डी.आई. सहित निजी निधि को आकर्षित करने पर विशेष महत्व देना।</p> <p>(11) वर्तमान स्कीमों को नया रूप देना तथा ग्रामीण पर्यटन स्कीमों को परम प्राथमिकता देना।</p> <p>(12) पर्यटन को प्रभावी ढंग से निष्पादित करने के लिए प्रत्याशित निवेशकों के साथ नियमित अन्तराल पर पर्यटन बैठक का प्रबन्ध करना।</p> <p>(13) बोर्ड में निवेशक कक्ष स्थापित करना जो बैंकों से प्राप्त निधिकरण सहित निवेश तथा आवश्यक कानूनी समाशोधनों को उपलब्ध करवाने में सहायक होगा।</p> <p>(14) पर्यटन की समस्त परियोजना को भी उद्योग विभाग के परियोजनाओं की रूपरेखा पर ही राष्ट्रीय मुख्य मन्त्री की अध्यक्षता में एकल खिड़की निकासी बैठक के समक्ष रखा जाएगा।</p>
	(ख) अधिकतर स्थानीय लोगों को उद्योग में नियुक्त करना।		<p>(1) कुफरी में स्थित होटल प्रबन्धन संस्थान का विस्तार करना तथा राज्य में वहां पर नई भोजन कला वाली संस्थानों को स्थापित करना।</p> <p>(2) राज्य में प्रमुख निजी प्रशिक्षण संस्थानों को स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित करना।</p> <p>(3) राज्य में स्थापित इकाइयों में अधिकतम रोजगार स्थानीय लोगों को उपलब्ध करवाया जाएगा।</p> <p>(4) विशेष क्षमता के सृजन वाली प्रक्रियाओं को संचालित करना तथा भारत सरकार की 'अतिथि देव भव' योजना के अन्तर्गत सहायता लेने की कोशिश करना।</p>
	(ग) राज्य में पर्यटन के आर्थिक प्रभाव की जांच करना।		<p>(1) पर्यटन बोर्ड निश्चयात्मक या नकारात्मक दोनों ही तरह से पर्यटन पर पड़ने वाले प्रभाव के आधार पर मजबूत आंकड़े बनाएगा।</p>

क्रम सं०	उद्देश्य	नीति	कार्य योजना
			<p>(2) प्रमुख संस्थानों एवं विश्वविद्यालयों आदि के माध्यम से आवधिक सर्वेक्षण का संचालन करना।</p> <p>(3) पर्यटन बोर्ड औपचारिक के अतिरिक्त अनौपचारिक दोनों ही क्षेत्रों में स्थानीय लोगों के रोजगार स्तर की भी जांच करेगा।</p>
	(घ) पर्यटन क्षेत्र	पर्यटन से सम्बन्धित गतिविधियों से स्व-पोषण के आधार पर अधिकतम संसाधनों को जुटाएगा।	<p>(1) पर्यटन बोर्ड इन सेवाओं जैसे पार्किंग स्थल, सुलभ शौचालय, पार्कों तथा मनोरंजन केन्द्र, पर्यटक स्वागत कक्ष, पंजीकृत इकाइयों से प्राप्त शुल्क, यात्रा एजेंटों, पर्यटन परिषद, जन निजी साझेदारियों, पट्टे, हवाई जहाजों के अड्डे आदि के माध्यम से सुविधाएं उपलब्ध करवा कर संसाधनों को बढ़ाने के लिए एक साधन होगा।</p>
3.	उच्च कोटि के पर्यटकों को आकर्षित करना।	(क) हिमाचल प्रदेश का ब्रांड प्रतीक।	<p>(1) पूर्ण प्रचार नीति के लिए समय-बद्धित पद्धति पर देश के प्रमुख परामर्शदाताओं की सेवाएं लेना।</p> <p>(2) ब्रांड प्रतीक को बढ़ाने तथा प्रचार अभियान को आरम्भ करने के लिए समस्त पणधारियों के सहयोग में 'डेस्टीनेशन हिमाचल कोष' सृजित करना।</p> <p>(3) देश के समस्त स्वागत कक्षों को मजबूत बनाना तथा निजी होटलों के लिए बुकिंग द्वारा तथा पर्यटन बोर्ड के माध्यम से भी पर्यटक संसाधनों को जुटाना।</p> <p>(4) जन निजी साझेदारी के माध्यम से ऑन लाईन आरक्षण पद्धति।</p> <p>(5) प्रमुख राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय व्यापार मेलों में भागीदारी।</p> <p>(6) पर्यटन से सम्बन्धित अद्यतन साहित्य तथा इनकी समुचित उपलब्धता सुनिश्चित करना।</p> <p>(7) हिमाचल को प्रदर्शित करने के लिए विदेशों में स्थित भारत सरकार के कार्यालयों के साथ सक्रिय तथा निरन्तर सम्पर्क बनाना।</p> <p>(8) पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए प्रमुख राज्यों तथा देशों के साथ एम ओ यू एस बनाना।</p> <p>(9) हि० प्र० को हिमालयन पर्वतों के माध्यम से बढ़ावा देना तथा विश्व में इसका ब्रांड प्रतीक बनाना।</p>

क्रम सं०	उद्देश्य	नीति	कार्य योजना
4.	प्राकृतिक तथा मानव निर्मित धरोहर।	(क) प्राकृतिक धरोहर	<ol style="list-style-type: none"> (1) पर्यटकों से शुल्क वसूल कर वनों एवं शीत मरुस्थल अभ्यारणों का संरक्षण तथा सुरक्षा का कार्य वन विभाग के साथ मिलकर ध्यान से करना ताकि इन स्थानों को पर्यटन परिषदों द्वारा सुरक्षित रखा जाए। (2) आगे के संरक्षण कार्य को पर्यटन परिषद् द्वारा कराना तथा मनाली मॉडल पर फंड प्राप्त करना। (3) पंजीकृत पर्यटन एजेंटों तथा ट्रेकिंग कम्पनियों से कुछ शुल्क वसूल करना ताकि इन निधियों को संरक्षण तथा विकास के लिए प्रयोग किया जा सके। (4) पक्षी दर्शन तथा मछली पकड़ प्रतियोगिता को प्रोत्साहित करना (पकड़ना तथा मुक्त कराने के आधार पर)।
		(ख) मानव निर्मित धरोहर	<ol style="list-style-type: none"> (1) प्रदेश में धरोहर भवनों जैसे गेयटी थियेटर के संरक्षण को बढ़ावा देना। (2) शहरी विकास, नगर योजना तथा भाषा एवं संस्कृति विभाग तीनों साथ मिलकर इन सम्पत्तियों के सूचीकरण एवं सुरक्षा हेतु कार्य करेंगे। (3) इस प्रकार के समस्त/स्थानों भवनों पर उनसे सम्बन्धित संक्षिप्त इतिहास लिखकर पट्टिकाएं लगाना। (4) शिमला, धर्मशाला, कसौली तथा डलहौजी आदि में धरोहर गिरजाघरों तथा मकबरों का संरक्षण करना। (5) जनजातीय क्षेत्रों में गोम्पो/मठों सहित प्राचीन स्मारकों का संरक्षण करना।
5.	पर्यटन ढांचा सृजित करने में प्रभावशाली सार्वजनिक क्षेत्र विशेषकर पी. पी. पी. की भागीदारी को प्रोत्साहित करना।	(क) हि० प्र० पर्यटन विकास निगम की सम्पत्तियों का अपनियोजन।	<ol style="list-style-type: none"> (1) पहले से ही चिन्हित सूची का समय सीमा पद्धति पर अपनियोजन किया जाएगा। (2) इन सम्पत्तियों से प्राप्त आय हिमाचल प्रदेश पर्यटन विकास निगम को अंशतः प्राप्त होगी जिसे वी आर एस/गोल्डन हैन्ड-शेक्स स्कीम में लगाया जाएगा। (3) शेष निधि पर्यटन विकास बोर्ड को अंशतः प्राप्त होगी जिसे प्रदेश में पर्यटन संरचना को बढ़ाने के लिए प्रयोग किया जाएगा। (4) अपनियोजन के समय कर्मियों के हितों को सुरक्षित रखा जाएगा।

क्रम सं०	उद्देश्य	नीति	कार्य योजना
			(5) कर्मचारियों को सेवानिवृत्ति के बदले में चिन्हित सम्पत्तियों को पट्टे के आधार पर चलाने के लिए लेने हेतु विकल्प दिया जाएगा।
6.	पर्यावरणिक दृष्टि से स्थायी पर्यटन को बढ़ावा देना।	(क) नई इकाइयों को स्थापित करना।	<p>(1) समस्त नए होटल वास्तु शिल्प के अनुसार जो स्थानीय पर्यावरण से मिलते हों।</p> <p>(2) कोई भी भवन निर्माण चार मंजिल से ज्यादा नहीं बनेगा।</p> <p>(3) वास्तुकला व जल संग्रहण संरचनाएं आवश्यक होंगी।</p> <p>(4) तहखाना/धरातल मंजिल पार्किंग के लिए होगा।</p> <p>(5) उचित कूड़ा कर्कट निपटान/मल-प्रवाह योजना आवश्यक है।</p> <p>(6) स्थानीय लोगों को अधिकतम रोजगार उपलब्ध कराना।</p> <p>(7) पेड़ों को नहीं/कम से कम काट गिराना।</p>
		(ख) नियमित विद्यमान इकाईयां।	<p>(1) समस्त होटलों आदि को प्रदूषण नियन्त्रण मानदण्डों के अनुपालन पर जांच अवश्य करानी होगी।</p> <p>(2) उपेक्षित इकाइयों का पंजीकरण किया जाएगा।</p>
		(ग)	पर्यटकों का रुझान शहरों से प्रकृति की ओर करने हेतु ग्रामीण पर्यटन की अवधारणा को अपनाना।
7.	पर्यटन सम्बन्धी गतिविधियों को बढ़ाने तथा संचालित करने के लिए सिविल संस्थानों एवं एन जी ओस को प्रोत्साहित करना।	(क) सक्षम बनाने के लिए।	<p>(1) पर्यटन विकास बोर्ड ग्रामीण पर्यटन, पर्यावरण मित्र पर्यटन तथा समुदाय पर आधारित परियोजनाओं में काम कर रहे एन जी ओस का पता लगाएगा।</p> <p>(2) स्वच्छता बनाए रखने तथा स्वच्छता अभियान के लिए पॉलिथीन थैलों पर रोक लगाना।</p>
		(ख) सक्रिय सहभागिता	<p>(1) बोर्डों तथा समितियों पर पर्यटन विभाग/बोर्ड का प्रतिनिधित्व होगा।</p> <p>(2) होटलों का वर्गीकरण, ढाबों का प्रमाणीकरण किया जाएगा।</p> <p>(3) पंजीकृत संस्थाओं के माध्यम से महत्वपूर्ण खेलों जैसे पैराग्लाइडिंग रीवर राफ्टिंग, पर्वतीय बाईकिंग आदि का आयोजन करना।</p>

क्रम सं०	उद्देश्य	नीति	कार्य योजना
8.	हिमाचल को साहसिक पर्यटन हेतु एक गंतव्य बनाना।	(क) पर्यटन विकास बोर्ड/विभाग	<ol style="list-style-type: none"> (1) समस्त प्रचार अभियान को पर्यटन पर कार्य करने के लिए केन्द्रित किया जाएगा। (2) प्रशिक्षण शिविरों के आयोजन/वित्तपोषण द्वारा पैराग्लाइडिंग एवं रीवर रैफ्टिंग जैसी गतिविधियों को प्रोत्साहित किया जाएगा जिनसे रोजगार उपलब्ध करवाने की सम्भावना हो। (3) जिला प्रशासन के माध्यम से सुरक्षा मानदण्डों को लगाना तथा लागू करना। (4) वाई एस एस/डब्ल्यू एच एम आई विभागों को सहायता करना। (5) वार्षिक खेलों जैसे पैराग्लाइडिंग, रीवर रैफ्टिंग, पर्वतीय बाइकिंग, मोटर खेल, पक्षी दर्शन, मच्छली पकड़ना, पर्वतारोहण तथा मैराथन दौड़ आदि का आयोजन करना।
		(ख) डब्ल्यू० एच० एम० आई० मनाली	<ol style="list-style-type: none"> (1) पर्यटन विभाग के सहयोग से अवकाशों के दौरान विद्यार्थियों के लिए समूह यात्राओं का आयोजन किया जाएगा। (2) छात्रों/बेरोजगार नवयुवकों को प्रशिक्षित करना (3) पर्यटन विभाग द्वारा रीवर रैफ्टिंग तथा पैराग्लाइडिंग स्कूल स्थापित करने का प्रबन्ध करना। (4) पर्यटकों के लिए विशेष कोर्सों का प्रबन्ध करना।

सम्पर्क :

1. पर्यटन एवं नागरिक उडयन विभाग,
ब्लॉक न०-28, एस. डी. ए. कॉम्प्लैक्स, कुसुम्पटी शिमला-9, हिमाचल प्रदेश
फोन : 0177-2625864, 2623959, 2625924, 2625511,
फैक्स : 0177-2625864, 2623959
ई मेल : tourismmin.hp@nic.in
वेबसाईट: <http://himachaltourism.nic.in>

2.

- * जिला शिमला विकास कार्यालय, शिमला
फोन नं० : 0177-2633181
- * जिला पर्यटन विकास कार्यालय, सोलन
फोन नं० : 951792-225641

- * जिला पर्यटन विकास कार्यालय, मण्डी
फोन नं० : 01905-225036
- * जिला पर्यटन विकास कार्यालय, कुल्लू
फोन नं० : 01902-224605 -2257605, निवास: 094181-64684
- * जिला पर्यटन विकास कार्यालय, कांगड़ा (मक्लोडगंज)
फोन नं० : 01892-221232
- * जिला पर्यटन विकास कार्यालय, चम्बा 01899-224002

3. पर्यटक सूचना केन्द्र :

शिमला: 0177-2652561, 2654589, 2832498
मनाली: 01902-252175, 252325
डलहौजी: 01899-242736
धर्मशाला: 01892-221205, 221232
चण्डीगढ़: 0172-2708569
नई दिल्ली: 011-23324764, 23325320
कोलकाता: 033-22126361
चैन्नई: 044-25385689
मुम्बई: 022-22181123
अहमदाबाद: 079-27544800
पठानकोट: 0186-2220316

AUTHORITATIVE ENGLISH TEXT

TOURISM AND CIVIL AVIATION DEPARTMENT

NOTIFICATION

Shimla-2, the 9th June, 2006

No.TSM-F(1)-1/2004.—The Governor of Himachal Pradesh in supersession of this Deptt. Notification No.6-12-/91-TSM(Sectt)-II dated 9-8-2000 is pleased to order to frame the Tourism Policy-2005, as per Annexure-"A" and the same is hereby notified/published for general information of all concerned.

This new Tourism Policy-2005 shall come in force with immediate effect.

By order,
AVAY SHUKLA,
Pr. Secretary (Tourism).

Department of Tourism and Civil Aviation

TOURISM POLICY 2005

MISSION STATEMENT :

"TO MAKE TOURISM THE PRIME ENGINE OF ECONOMIC GROWTH IN THE STATE BY POSITIONING IT AS A LEADING GLOBAL DESTINATION BY THE YEAR 2020"

1. Introduction :

- 1.1 Tourism is one of the fastest growing industries in the world. The number of tourists worldwide has been registering phenomenal growth and it is expected that this number would shortly touch 1.5 billion. Tourism contributes about 11% of the world workforce and 10.2% of the global gross domestic product. The dynamic growth of this industry is evident from the fact a new job is added to the sector every 2.5 second.
- 1.2 This pattern and dynamic character of the Sector necessitates the policy to adapt to the changing environment. Policies are products of time and circumstances, available resources and technologies and most importantly, the needs of the stakeholders.
- 1.3 This Policy document aims to provide clear direction for the development of tourism in the State. Himachal Pradesh is already a well-established and recognized tourist destination. It seeks to harness the fullest potential of the State for Development of tourism, which in turn can be a prime engine for economic growth and prosperity of the State, besides effectively addressing the problems of unemployment and poverty. This document is a result of wide range of consultations within and outside the Government, including the industry, tourism unit operators and other stakeholders. Besides outlining the policy, the document also lists out the strategy for implementation, as also specific action plans to implement the policy.
- 1.4 Nature has bestowed Himachal Pradesh with unique beauty and splendour with its lush green valleys, snow covered Himalayan ranges, a serene, peaceful, hospitable and comfortable environment, smiling people and a rich cultural heritage - which tourists would be hard put to find elsewhere.
- 1.5 Being in the lap of Himalayas this fact becomes its natural and unique USP with global appeal. The outer fringe of Himachal is formed by the Shiwalik hills, which are characterised by shallow valleys and dense scrub forests. The mid ranges have the majestic Himalayan cedar and the spruces— followed by alpine meadows that intersperse themselves with the snow clad peaks of the Greater Himalaya.

- 1.6 Tourism, as we understand it today, in Himachal Pradesh, received recognition only in the 19th century, when the British established their chain of hill stations. Earlier, Himachal had been a destination for pilgrims only. A fillip to tourism was administered when British declared Shimla as summer capital of India in 1864. Post independence and up-gradation as fledged State in the year 1971 led to more investment in the infrastructure sector leading to opening up of the state. However the biggest explosion in tourism occurred in the mid 80s and 90s with the Kashmir problem when the number of hotels and hotel rooms increased within this period from 350 to present 1710 and 6300 to 36000 respectively with its concomitant chaos and haphazard growth which the State would have done well without. With the wisdom of hind sight the State is now more equipped to deal with the problems of yesteryears and this document attempts to address those very problems.
- 1.7 During the year 2004, the tourist arrivals in the state were 6.5 million which is roughly equivalent to the population of the State. (2.04 lacs were foreigners). In terms of numbers therefore the State has done more than expected. The challenge now is to attract quality tourists and increase the stay of the tourists in the State. We also need to think globally as even the domestic tourists today have a choice unlike in the past. By focussing on quality tourist the State Government also aims at promoting sustainable tourism and encouraging the private sector to develop tourism related infrastructure in the State – without disturbing the existing ecology and environment.
- 1.8 In order to increase the duration of the stay of the visitors/tourists, a special emphasis is being placed on the development of activity-based tourism and opening up new sub destinations. To promote tourism in the countryside and to lesser-known areas, appropriate infrastructure will be developed within available resources. Himachal was earlier known only for the summer season. Efforts are being made to break the seasonality factor and tourism products have been diversified to attract the tourists in other seasons too. Now Himachal is known as “A Destination for All Seasons and All Reasons.”
- 1.9 Tourism contributes nearly 8% of the State Domestic Product which is roughly the same as horticulture sector. With careful planning and infrastructural development, the Policy proposes to increase it to 15% by the year 2020. The position with respect to some of the other economies is as follow:

2. Policy Objectives :

- (1) To establish Himachal Pradesh as a leading tourist destination in the country and abroad;
- (2) To make tourism a prime engine for economic development and prosperity of the State and as a major means for providing employment;
- (3) To encourage a strong and sustainable private sector participation in creation of tourism infrastructure especially through public private partnerships;
- (4) To promote sustainable tourism which is not only environmentally compatible but also leads to economics betterment of the rural people.
- (5) To attract quality tourist and to increase their stay in the State;

- (6) To safeguard the State's natural and manmade heritage;
- (7) To encourage civil societies & non-governmental organizations for promotion & the conducting of tourism related activities;
- (8) To position Himachal Pradesh as a one stop destination for adventure tourism.

3. Himachal Tourism—A SWOT Analysis :

3.1 An analysis of Strengths, Weaknesses, Opportunities and Threats (SWOT):

4.1 STRENGTHS:

1. One of the rare places in the world offering five distinct seasons, thus having potential to attract tourist inflow round the year;
2. Political and Social stability;
3. Recognized as a peaceful and hospitable State;
4. Salubrious climate;
5. Pollution free environment;
6. Offers a rare conglomerate of eco-tourism, pilgrimage, adventure, culture, heritage, leisure, wilderness etc.;
7. Fairly good infrastructure;
8. High literacy;
9. Rich history and heritage that has something to offer to all. Its Buddhist monasteries, which are of thousand years of old, ancient temples, churches and cemeteries;
10. Special package of incentives for setting up of tourism units;
11. Strong political will to promote tourism;

4.2 WEAKNESSES:

1. Negligible air and rail link in the State;
2. Inadequate flow of foreign tourists;
3. Non-disbursal of tourists round the year, putting severe strains on civic infrastructure during the peak season;

4. Lack of trained tourist guides at important tourist places and historical tourist sites;
5. Saturation at the established tourists destinations;
6. No new major tourists destination has come up recently;
7. Lack of adequate parking places at important tourist places;
8. Poor marketing of the State abroad and inadequate marketing within the country;
9. Very little budget;
10. Problem of land acquisition;
11. Problem of conversion of forest land;

4.3 OPPORTUNITIES:

1. Strong potential for activity based tourism such as white water rafting, Para-gliding, trekking, mountaineering, water sports, mountain biking, Car Rallies etc.;
2. A strong base for heritage tourism to attract persons from all walks of society and religious beliefs;
3. To develop an ideal destination for nature lovers by promoting eco-tourism;
4. Create synergy between heritage and pilgrimage tourism;
5. Development of wetlands of the State to attract nature lovers especially bird watchers;
6. Promote the State as an open university and learning centre in mythology, anthropology and ornithology etc.;
7. Position it as an ideal destination for the film industry;
8. Himachal has something to offer to persons of all ages, groups, beliefs and interests. There is unlimited scope for development of varied tourist packages;
9. Himachal can become one of the leading adventure destinations in the world;
10. Promote wilderness tourism for lovers and seekers of nature, peace and quiet.
11. Create new destinations in yet unexplored but beautiful areas. This would also ease the burden on established tourist destinations.

4.4 THREATS:

1. Tremendous strain leading to collapse, at times, of civic amenities at leading tourist destinations during the season;
2. Haphazard growth & construction threatening the environment, especially at the leading tourist destinations;
3. An alarming growth of concrete structures creating a disharmony with the local environment;
4. Unscrupulous commercialization of tourism could erode the social and cultural values;
5. Aggressive competition amongst the leading tourists States and a strong promotion of tourism by other States;
6. Lack of coordinated strategy by the different Government Departments;
7. A large increase in volume and limited increase in value;
8. Poor garbage/waste disposal posing threat to the environment.

5. Strategy :

- 5.1.1 **Tourism Sub Plan:** There is no denying the fact that the total budget with the Department of Tourism is less in comparison to the other tourism-oriented States in the country. Tourism is one industry, which is linked with all development departments. Under their normal programmes, they are required to meet the infrastructure demands for promotion of tourism. What is needed to mechanise and accelerate the activities of the tourism department is to integrate and coordinate with the departments like PWD, Urban Development, I&PH, Health, Horticulture, Forest, Power etc. If properly coordinated, this is likely to yield good results and the deficiency of budget can be surmounted. The government would take steps to manage the funds in such a way that the tourism related departments will be asked to pool their resources with regard to such schemes which will be monitored at the level of Chief Minister through the Tourism Department Board.
- 5.1.2 In addition to the above the TSP will include the budget of the Tourism Development Board/ Department as well as the private investment likely to flow in through public private.
- 5.2.1 Infrastructure development Demand driven tourism Infrastructure in Himachal Pradesh has come up in some of the major tourist destinations like Shimla, Manali, Dalhousie, Mcleodganj, Kasauli and Chail. With rapid increasing tourist influx and expending hotel accommodation in these areas, the civic infrastructures are under serious strain. The State Government therefore proposes to upgrade the civic infrastructure in the above towns on priority. The funds raised by the Tourism Department/ TDB through GOI under their various schemes will also be used to strengthen this area. Private investment in infrastructure will be welcomed with open arms. Priority areas will include setting up of hill stations, spas and resorts , ski slopes, airports, tourist centres, multiplexes, parking areas,

entertainment centres, amusement parks, ropeway, golf course, 4/5 Star Hotels, standardized budget accommodation etc.

5.2.2. In service like tourism, availability of skilled work force is essential for delivery of professional services of the highest order. The Government will invest in human resource development so that the managerial and technical skill is made available with the State. Presently the State has one Food Craft Institute-cum-Hotel Management Institute at Kufri. The Department will endeavor to open FCI's one in Kangra district and another in Kullu.

5.3.1 New Marketing Strategy.—In order to bring the State on to the international tourist map and to increase the inflow of the tourists the following actions will be taken up for strengthening the marketing strategy of the State:

- (i) Creation of 'Destination Himachal Funds' which will be a joint effort of Tourism Development Board, the major Temple Trusts and the private sector.
- (ii) Printing of new brochures, posters and other tourist literature.
- (iii) Developing 10 minutes, 20 minutes tourism films in order to telecast in the electronic channels and also display during the tourism fairs/ marts.
- (iv) Up-gradation of Information Centers. These centers will not only provide information but also provide booking facilities for HPTDC & Private Hotels for reservation of accommodation/transportation, cloakroom etc.
- (v) Installation of touch screen kiosks with full information about the State at important international airports/national airports and railway stations of the country.
- (vi) Participation in leading national and international tourism fairs. In this the private sector will also be involved so put up a unified 'Destination Himachal campaign'.
- (vii) Organization of tourism events in the State particularly during the off season in order to attract the large number of tourists.
- (viii) Providing information about the state through modern means like website, e-mail, around the clock toll free tourist assistance, and helpline etc.
- (ix) Release of advertisements in the electronic and print media.
- (x) Organize familiarization tours of the leading tour operators of the country and overseas in the State.
- (xi) Conduct of buyer-seller meets.
- (xii) Professional guides to be trained and encouraged.
- (xiii) Signage's of the international class will be installed on the national, state and at the important tourist highways and stations.

5.3.2 Himachal, because of its natural scenic beauty attracts several film makers for shooting of films, TV serials etc. Presently they have to seek permission for shooting from various departments. The government proposes to declare Commissioner-cum-Director Tourism as the sole authority for granting all type of permissions related to film shootings and the fee thus be collected by the Tourism department could be further remitted to the concerned department. In addition to this the department will invite investment from private parties for setting up of the film cities, studios and hiring of filming equipment etc. for which govt. land could be provided on ppp basis. Pro active action would also be taken to attract film shooting parties to Himachal.

5.4.1. Improving connectivity.—Connectivity whether by road, rail or air is of essence if tourism has to grow.

5.4.2. Presently the State has three existing airports at Jubbar Hatti, Bhuntar and at Gaggal. These airports are being upgraded for landing of a larger capacity aircrafts. The airport at Pathankot is also being opened for the use of civilians where Boeing will land. This will give a big boost to tourism to the State especially to Kangra and Chamba regions. The Government has also taken up the matter regarding setting up of an International airport near Sundernagar.

5.4.3. Operating more affordable flights into Himachal would not only promote travel tourism but also make viability for the aviation companies to start heli-taxis services in the State. Helicopter taxi services would extend the reach of higher end tourists to soak in the delights of culturally and geographically rich hinterland of Himachal. The State has 55 helipads available for the services.

The State Government is also making efforts for the introduction of more special trains from various destinations in the country upto Kalka and Pathankot.

The network of national and state highways is also being strengthened for all tourist destinations. The state government shall also seek to provide safe, economical and reliable transport within the state as well as across state borders. The government shall also evolve a mechanism to simplify the collection of taxes and levies so as to facilitate the unhindered movement of tourist in the state.

5.5.1 Strengthening of Tourism Development Board.—The State Government has set up a Tourism Development Board under the chairmanship of Hon'ble Chief Minister to formulate policy guidelines for development and promotion of Tourism Industry in the State and to advise the State Government on matters regarding regulation and licensing in the Tourism Industry. Efforts will be made to increase the resources of the Board so that the Board can carry out various developmental and other tourism promotional activities. The income of the Board will be built up through the user charges levied being level by Tourism Deptt., income from PPP projects, lease money, income from Tourism Councils etc. The Board will generally undertake improvements in the tourist areas, provide assistance to the Department of Tourism and to the Tourism Development Councils.

5.5.2 The Manali model of collection of green fee from tourists will be replicated in other major tourism destinations. The funds so collected will be scrutinized for 10/15 years and sizeable Tourism Master Plans created and implemented in time bound manner.

5.6.1 Private sector investment.—In order to attract investors, it is necessary to simplify the procedures to facilitate genuine investors. The projects where forest/revenue clearances are needed will be dealt on priority within a specified time not exceeding 90 days.

5.6.2 In order to promote rural tourism and to give incentive to the entrepreneurs, luxury tax will be exempted for units up to five rooms. In addition to this, the electricity and water charges will also be reduced to give fillip to investment in tourism projects in rural areas. This incentive will be provided to the promoters for a period of 10 years from the date of their commercial operation. The Government will consider assigning the task of Luxury tax collection on the pattern of collection to the Tourism

Department of State Road Tax (SRT) in Transport Department. The funds so collected by the department shall form part of the resources of the Board.

- 5.6.3. Single window clearances for tourism projects on the pattern of the single system. Industries Department has been made applicable. The suitable Government land either through land bank or otherwise available in the State will be transferred to the Tourism Department, which will be further leased out to the private entrepreneurs strictly on the open competitive bidding basis.
- 5.7.1 **Effective regulation.**—The State Government has passed the H.P. Registration Tourist Trade Act, 2002. It calls for inspection and checking of the hotels, travel agencies against over charging, sub standard service etc. The Government proposes to carry out the inspection work by delegating necessary powers and also by involving the Hotel Associations.
- 5.7.2. The Tourist Police in the State will be strengthened concept of by placing a cadre of 500 police and home guards personnel who will be trained for regulating tourism related activities. They will be provided with special uniforms/distinguishing mark and will assist the tourist.
- 5.7.3. The Tourist Information Centres will be manned apart from the Deptt./TDB staff by the students of Hotel Management Institute and MTA (University).
- 5.7.4. The State government will take steps to ensure proper hygienic conditions and to prevent the exploitation of tourists on national and state highways and at tourist places. The Government proposes to classify the dhabbas situated on the National and State highways. The classification will be done on the basis of facilities provided, hygienic condition, quality of the food, availability of toilets, parkings etc. The government will encourage ethnic Himachal cuisine in these dhabbas.
- 5.7.5. Similarly all the Tourism Units in the State will be classified as per facilities provided so that the tourists get their value for money. The Hotel Associations will be actively involved.
- 5.7.6. To promote excellence in tourism, the government will institute monetary and non-monetary awards for institutions and individuals for their outstanding contribution in various sectors of tourism like; accommodation, catering, transport, travel agency, eco-friendliness, cleanliness etc. This scheme will be administered by a State level committee consisting of experts, representatives of the tourist trade and government officers.

6. Thrust areas :

In order to achieve the policy objectives indicated above the Department/Board has identified thrust areas for action and follow up some of which are as follows:—

6.1 Rural Tourism :

- 6.1.1 The fruits of tourism must percolate down to the rural areas in order that it is truly sustainable and responsible. For this the Deptt./Board proposes that

* Rural Tourism villages are identified and notified by the Deptt.

- * The precondition for declaring these as RT villages would be that they must predominantly have traditional architecture and an MOU would be signed with the Panchayat that this would be maintained. The villagers may modify their houses internally but they must maintain their traditional outer façade.
- * For the sake of easier marketing these villages must be near to the existing tourist centre which will also ensure dispersal of tourist to the rural areas and promote decongestion.
- * These would be dovetailed with the Govt. of India Ministry of Tourism Scheme under which funding is available up to Rs 5 lacs. This would be used to create infrastructure like roads, streets, drainage, lighting, parking, bus stand, water supply, sanitation, tourist reception centre, rural museum, open air theatre, parks, nature trails, crafts bazaar etc. This could also be funded from the Deptt./Board funds.
- * In such notified villages there would be no luxury tax or commercial rates for electricity up to 5 bed room home steads.
- * The existing schemes of the Deptt. would be reviewed and efforts would be made to provide funds for renovating the homesteads and providing grant /loans to the weaker section of the society. The Deptt. would actively work with the Deptt. of Rural Development and nationalised banks for tying up in this regard.
- * The government proposes that in these home steads Himachali/local food will be served.
- * Linkage would be sought to promote local handicrafts and cultural toupes.
- * The procedure for registration of village tourism guest houses shall be simplified and adequate publicity given to the facilities available.
- * The above scheme would be made applicable *mutus mutandi* to Heritage and Orchard tourism.

6.1.2 The State has a number of old palaces, forts, havelies and other beautiful buildings in rural areas which if properly developed could become important tourist destinations themselves. The Government shall encourage the development of such sites for use as tourist accommodation and such new heritage hotels located in rural areas shall be exempted from the luxury tax for a period of five years. The Government would endeavour to associate the Archaeological Survey of India and private sector in the development of such sites.

6.1.3 Shimla evokes memories linked to the Raj, the freedom movement and in more recent times events such as the 'Simla Agreement'. A monumental testimony to the times of the Raj are buildings like the Viceregal Lodge, which now houses the Indian Institute of Advanced Study, the Gaiety Theatre and more than a hundred other heritage buildings. Tourism Deptt./Board will endeavour to preserve these heritage buildings including churches and graves and promote nostalgia tourism linked to the colonial and freedom struggle era.

6.1.4 Apple and orchard tourism is also an area of focus as in the Distts. of Shimla, Kinnaur, Kullu and parts of Mandi Distt. traditional farm houses could be converted into home steads wherein the tourists could enjoy the beauty right from apple blossom to harvesting.

6.1.5 Apple Festival celebrated annually would be continued with active involvement of the Horticulture Deptt. and the Hotel Association.

5.1.6 The Deptt./Board will co-ordinate with the watershed/livelihood related projects like Mid-Himalaya Watershed Dev. Project funded by World Bank so that rural/eco tourism can be furthered in these project areas.

6.2 Eco Tourism :

6.2.1 Himachal offers a new era of nature enjoyment and learning. It also provides visitors an excellent exposure to the temperate forests. This makes it an ideal area for developing eco-tourism activities like jungle safaris, trekking, rock climbing, forest trails, nature walks, angling (esp. golden mahaseer and brown trout), camping etc. All these activities are to be conducted in a manner that promotes awareness of the environment and helps maintain the ecological balance.

6.2.2 The eco tourism projects being predominantly situated in forest lands are technically under the Forest Deptt. which has already formulated an Eco Tourism policy in consultation with the Tourism Deptt. under this Eco-tourism Societies have been established on CBET (Community Based Eco-Tourism basis) to cover the Great Himalayan National Park (Kullu), Himalayan Nature Park (Shimla), Renuka Wildlife Sanctuary (Sirmaur) and Potter's Hill Van Vihar (Shimla).

6.2.3 The Government will harness the tourism potential of forests in the state by developing camping sites with basic infrastructure facilities and other public convenience services. A nominal fee shall also be determined by the Government for the use of camping site for the maintenance and for the conservation of these forests. The private parties shall be encouraged for setting up of such camping sites on environment friendly basis. The Government will endeavour to open forest rest houses for the tourists through the society. These would be run on community based eco tourism tenets or through public private partnership with companies with good track record of working in Eco-tourism.

6.2.4 **Wildlife Tourism** is an integral part of Eco Tourism. Himachal Pradesh has a varied topography, climate and forest cover and is endowed with a vast variety of flora and fauna. At present there are 32 Sanctuaries, 2 National Parks and 3 Game Reserves. The sanctuaries include Simbalwara (Sirmaur), Churdhar, Chail (Solan), Maharana Pratap Sagar (Kangra) Manali (Kullu), Kanwar (Kullu), Kalatop Khajjiar (Chamba) and Daranghati (Shimla). The National Parks are Pin Valley National Park, Spiti and the Great Himalayan National Park, Kullu; the Nature parks are at Kufri (Shimla), Manali (Kullu) and Gopalpur (Kangra). The Tourism Deptt. proposes to work actively with the Wildlife Wing of the Forest Deptt. to further develop and improve wildlife parks/zoos, bird watching towers and other public utility services for the facility of the tourists. A reasonable fee shall be determined by the Government for use of such parks/zoos for its maintenance.

6.2.5 **Development of Lakes and wetlands** is also part of eco tourism. The State Government will make special efforts to make natural and man made lakes as important tourist destinations. Steps will be taken to maintain and enhance their beauty by undertaking development in an integrated manner. Facilities for water sports in Maharana Pratap Sagar, Chamera and Gobind sagar will be developed to International standard and national and international level events will also be organised to popularize these destinations. Maharana Pratap Sagar will be developed as a world class water sports destination with the financial assistance of the Central Government in order to develop activities like water sports, angling, bird watching, setting up of house boats, development of artificial

beaches etc. The Government will also encourage the private sector to set up houseboats and operate shikaras in the Maharana Pratap Sagar. Improvement of the forest rest houses will also be carried out in the area and will also be made available to the tourists in order to accommodate them.

6.3 Pilgrimage Tourism :

6.3.1 Himachal has emerged as an important pilgrim destination. A large number of religious tourists visit sacred shrines of Himachal Pradesh through out the year. A large number of religious places for people of almost all religions are situated in the State. The State Government propose to develop wayside/civic amenities, parkings, landscaping and beautification around the temple, Sulabh Shauchalyas, drinking water, garbage disposal etc. at these religious places in coordination with the temple trusts on the lines of Vaishnoo Devi Trust. During important festivals special measures will be taken up for the safety and security of the tourists like setting up of information centres, tented colonies to accommodate tourists and to deploy special Tourist Police Force on the lines of Vaishnoo Devi.

6.3.2 As a deliberate policy the Deptt./Board will make efforts to integrate the important temples of Himachal with Vaishnoo Devi in J&K or the Chaar Dhaam in Uttaranchal.

6.3.3 The Deptt./Board will work in coordination with the Deptt. of Language Art and Culture and also the Temple Trusts so that Tourist information centres are established in all the major temples and run by the temple trusts.

6.4 Adventure Tourism :

6.4.1 The Tourism Deptt./Board will make comprehensive adventure tourism promotion plan for the State and shall lay down the regulatory framework for enforcement of safety standards. For the promotion of adventure sports, the Department/Board will impart training in different sports to the youths. International competitions in such sports will be organised for attracting participants not only from the country but also from the abroad in coordination with the Deptt. of Sports.

6.4.2 The Tourism Deptt./Board will support all efforts to promote and set up adventure sports schools at various locations in order to train more youths in Paragliding, Rafting, Water Sports, Angling, Skiing, Mountaineering, Motor Sports etc. in coordination with the WHMI Manali and the State Level Associations. The Deptt./Board will help the WHMI in setting up more Sub Centres in the State to take adventure tourism the hitherto unexplored places. It will assist in training the local youth in adventure tourism so that they also benefit through employment & other means. Similarly it will work at tandem with Forest Deptt. and the Eco Tourism Societies to meet the above ends.

6.4.3 The State was the first and continues to be the only State, which has **heli-skiing** in the country. This attracts foreigners and quality tourists with paying capacity to some of the best powder-snows that the world can offer. The experience in this venture has been very positive despite the initial apprehensions about possible disturbances to the environment and fauna. It is proposed to expand the concept of heli-skiing by introducing activities like heli-trekking and cross-country skiing.

- 6.4.4** Conventional skiing and setting up of more ski lifts and ski resorts in the public private partnership will be a major thrust area. The Chanshal range beyond Rohru which has great potential will specially be explored.
- 6.4.5** The State started promoting paragliding from 1984 onwards. Himachal is now the leading States in the country in this field. Bir Billing in Kangra, Solang and Marhi in Kullu, Bilaspur, Kasauli etc. will continue as important centres for the sport. More areas will be explored and opened up with the objective of providing a source of livelihood to the local youth. The Bir Billing Pre World Cup Event will continue to be an annual event. A paragliding School will be opened at Dhelu. Bir Billing will be developed over the years into a top class paragliding destination internationally on self financing basis with the local community benefiting the most.
- 6.4.6** The Tourism Deptt. in tandem with the WHMI and other adventure sports operators will encourage mountaineering expeditions internationally. Similarly Trekking and adventure sports activities will be undertaken on large scale through WHMI on sustainable basis especially during the holiday season for school and collage students.
- 6.4.7** The Deptt./Board will continue to hold annual events of as many adventure sports activities as possible through their respective associations – paragliding, river rafting, sailing, mountain biking, endurance events, marathons, motoring events, vintage car rallies (biannually) etc. The objective is that eventually all these events must become self sustainable.
- 6.4.8** One of the major aims in this area will be to get the latest technology in the field of adventure sports in terms of equipments and know how be it skiing/ropeway projects, water sports or paragliding. All PPP projects in this field of adventure tourism will have this as a necessary precondition.

6.5 Promoting Unexplored Himachal :

- 6.5.1** The main tourism circuits in Himachal are fairly well known and even remote districts like Lahaul-Spiti and Kinnaur are now becoming popular destinations to relax and unwind. Himachal also has many undiscovered spots with unspoiled charm that are worth a visit for a quiet rewarding holiday spent amidst the splendour of nature away from the crowds. The State Government will made special efforts to develop unexplored destinations with the assistance of Central Government, to improve the sanitation, roads, parkings, toilets, accommodation, beautification and land scaping of tourist interest places, wayside amenities etc. Efforts will be made to keep these new areas neat and clean and only limited construction will be allowed, so that these areas may not become over saturated and the construction so allowed will preserve the architecture and ecology of the State.

Some of these areas include:

- * Lahoul
- * Spiti
- * Kinnaur
- * Jhanjheli
- * Jot Chamba
- * Rajgarh and Choor
- * Nahan

- * Chindi
- * Barot/Jatingari
- * Rohru Chansal
- * Sarahan and Bashal Dhar

6.5.2 Ever since the opening-up of tribal/border areas of Himachal Pradesh to foreigners, the number of domestic and foreign tourists visiting these tribal areas has increased manifold. Lahaul-Spiti and Kinnaur districts have emerged as important destinations. Yet compared to the potential it is just a trickle. These areas being enormously rich in culture the effort would be to invite culturally conscious tourists who enjoy the quality and difference of experience. Preservation of the cultural uniqueness of these areas therefore will remain the prime concern of the Government. The Government will only allow such construction, which preserve the architecture and ecology of the area. The private sector will continue to be encouraged to set up guest houses for which subsidy will be provided from the State budget. Tented accommodation will be encouraged with local participation so that maximum benefits accrue to the local economy. The centuries old monasteries are also being upgraded where foreign tourists show lot of interest.

6.5.3 Tourism Councils will be set up under the Tourism Act, 2000 in these areas so that some fee is charged from the trekkers/tourists the proceeds of which will go to the local Panchayats for the maintenance and upkeep of the tourism related infrastructure and for regulating tourism on sustainable basis.

6.5.4 The Deptt. will take up the opening up of Tribal/Border areas further so that the present restrictions on travel in the inner line areas is removed.

6.5.5 The Manali Leh route which has already become a favourite for both domestic as well as international tourists will be further improved in coordination with the Govt. of J & K and efforts would be made to link it to the Buddhist Circuits of Shimla – Kinnaur- Spiti – Udaipur -Pangi and Palampur-Dharamshala-Dalhousie.

6.6 Health Tourism :

6.6.1 There is tremendous scope to set up spas, health resorts, recuperative centres etc. all over the State. Himachal Pradesh has an enormous wealth of medicinal plants. Herbal Gardens, Herbal Trails will be developed as tourist attractions. The Tourism Department /Board in collaboration with Department of Indian System of Medicine, Department of Ayurveda and Forests will organize such tours which will further develop awareness and interest about medicinal plants amongst the school children and tourists.

6.6.2 The Government also proposes to develop spa/health resorts in association with the private sector at various locations in the State. The Government will also harness the potential of Panchkarma and start it in a big way in the State in order to attract large number of tourist for Panchkarma treatment. Training the youth in Panchkarma will be undertaken through the Deptt. of Ayurveda who will then be employed in spas and health resorts.

6.7 Arts Crafts and Souvenir :

- 6.7.1** Promotion of local art and culture and generation of income of employment through it is a major component of tourism policy. The State Government shall endeavour to encourage the development of souvenir industry linked to local crafts, events and places which would promote a distinctive image of the State both within and without the State. The private sector will also be encouraged to patronize and promote local folk, culture and crafts for the visiting tourists.
- 6.7.2** Development of souvenir industry including standardised packaging is of utmost importance for which leading institutions and voluntary organisations in the country like NID, NIFT, Auroville, Tilonia etc. will be actively engaged.

Annexure (Action Plan)

1. Short and Medium term (2 yrs to 5 yrs) :

Sl. No.	Objectives	Strategy	Action Plan
1.	(a) To establish Himachal as a leading tourist destination in the country & abroad.	(a) Brand image of H.P. & Media strategy.	(i) Hire leading consultants of the country within next 6 months to have a brand image & media strategy in place. (ii) Create "Destination Himachal Fund" fund collaboration with all stakeholders for strengthening of brand image & media campaign. (iii) Strengthen all TIC in the country and generate resources by booking for private hotels also through Tourism Board. (iv) Have online reservation system through public private partnership. (v) Participate in leading national & international trade fairs. (vi) Update tourism related literature and ensure its adequate availability. (vii) Have active and constant contact with Govt. of India offices abroad for projecting Himachal. (viii) MOUs with leading States and Countries for promotion of tourism. (ix) To promote H.P. through Himalayas and its brand image globally.
		(b) To upgrade tourism related Infrastructure to international level.	(i) To give top priority to public private partnerships. (ii) Collaborate with international and reputed national companies which can provide world class technology, knowhow and expertise in improving infrastructure in tourism.

Sl. No.	Objectives	Strategy	Action Plan
			<ul style="list-style-type: none"> (iii) To seek maximum assistance from Ministry of Tourism, Govt. of India for funding under various schemes like Circuits, Destination, Large-income generating projects, rural Tourism etc. (iv) To set up a Tourism sub Plan in the State so that funding could be integrated & monitored effectively at the State level (Road, Sewage, lighting, transport, telephone etc). (v) To actively pursue the expansion of airports to that larger planes could land. (vi) To promote the use of Helicopters for easy access to remote & land locked areas. (vii) To set up 4/5 Star Hotels in leading destinations. (viii) To have more 2/3 Star Hotels for budget accommodation. (ix) To create more Youth Hostels.
2.	To make Tourism a prime engine of economic growth in the State & as a means for providing employment.	(a) Attract outsider investment.	<ul style="list-style-type: none"> (i) Take full advantage of the Govt. of India package of incentives which include excise & income tax exemption. (ii) To give top priority to public private partnerships. (iii) Collaborate with international and reputed nationals companies which can provide world class technology, know-how and expertise in improving infrastructure in tourism. (iv) To seek maximum assistance from Ministry of Tourism, Govt. of India for funding under various schemes; Circuits, Destinations, Large Income Generating projects, rural tourism etc. (v) To actively pursue the expansion of airport so that larger planes could land. (vi) To promote the use of Helicopters for easy access to remote & land locked areas. (vii) To set up 4/5 Star Hotels in leading destination. (viii) To have more 2/3 Star Hotels for budget accommodation. (ix) To categorize Hotels in the State to provide standardized services. (x) To lay special emphasis to attract private

Sl. No.	Objectives	Strategy	Action Plan
			<p>fund including FDI for setting up of new hill stations, water sport related resorts, ropeways including Ski Resorts, Spas, Eco-Tourism related projects etc.</p> <p>(xi) Recast existing schemes and lay top priority to rural tourism scheme.</p> <p>(xii) To hold Tourism Conclave at regular intervals with the prospective investors for hand holding exercise.</p> <p>(xiii) To setup and Investors Cell in the Board which will facilitate, investment including funding from Banks & providing necessary statutory clearances.</p> <p>(xiv) All Tourism projects will also be placed before the Single window clearance meeting chaired by Hon'ble C.M. on the lines of Industries depts. projects.</p>
		(b) To employ maximum local people in the Industry.	<p>(i) Strengthen HMI Kufri and to set up there new Food Craft Institutes in the State.</p> <p>(ii) To encourage setting up of leading private training institutes in the State.</p> <p>(iii) Maximum employment will be provided to locals in the Units setup in the State.</p> <p>(iv) To conduct special capacity building courses and seek support from GOI under its "Atithi Dev Bhava" scheme.</p>
		(c) To monitor the economic impact of tourism in the State.	<p>(i) The tourism Board will build a strong Data base on the impact of tourism both positive & negative.</p> <p>(ii) Conduct periodic surveys and status through leading institutions & Universities etc.</p> <p>(iii) Tourism Board will also monitor the status of employment of local persons both in formal as well as informal sector.</p>
		(d) Tourism Sector will generate maximum resources on self sustaining basis from tourism related activities.	<p>(i) The tourism Board will be the vehicle for the generation of resources through the services provided by it like parking places, Sulabh Shauchalayas, Parks & Entertainment centers, T.R.C's, fee from registered units, travel agents, Tourism councils, Public Private Partnership, leases, helicopter sides etc.</p>

Sl. No.	Objectives	Strategy	Action Plan
3.	To attract quality Tourists.	(a) Brand image of H.P.	<ul style="list-style-type: none"> (i) Hire leading consultants of the country in time bound manner for a complete media strategy. (ii) Create "Destination Himachal Fund" in collaboration with all stakeholders for strengthening brand image & launching media campaign. (iii) Strengthen all TIC in the country and generate resources by booking for private hotels also through Tourism Board. (iv) Have online reservation system through public private partnership. (v) Participate in leading national & international trade fairs. (vi) Update tourism related literature and ensure its adequate availability. (vii) Have active and constant contract with Govt. of India offices abroad for projecting Himachal. (viii) MOUs with leading States and countries for promotion of tourism (ix) To promote H.P. through Himalayas and its brand image globally.
4.	To safeguard States natural & manmade heritage.	(a) Natural Heritage.	<ul style="list-style-type: none"> (i) To work closely with the Forest deptt. To conserve and protect forests, cold deserts sanctuaries by charging fee from the tourists so that these places are preserved through Tourism councils. (ii) To work towards conservation through Tourism council and Fund generated by on the Manali model. (iii) To charge some fee from the registered travel agents & trekking companies so that these funds are used for conservation and development. (iv) Promote bird watching & angling competition (on catch & release basis).
		(b) Man made heritage.	<ul style="list-style-type: none"> (i) To promote conservation of heritage buildings in the State like Gaiety Theatre. (ii) To work at tandem with Deptt. Of UD, TCP & LAC in the listing of these properties & conserving them.

Sl. No.	Objectives	Strategy	Action Plan
			<ul style="list-style-type: none"> (iii) To put up plaques on all such sites/building giving its history. (iv) Protect heritage Churches & graves in Shimla, Dharamshala, Kasauli & Dalhousie etc. (v) Protect ancient monuments including on Monasteries in the tribal areas.
5.	To encourage strong public sector participation in creation of tourism infrastructure especially the PPP.	(b) Disinvestment of H.P.T.D.C. properties.	<ul style="list-style-type: none"> (i) The list already identified will be disinvested in time bound manner. (ii) The income from these properties will accrue partially to H.P.T.D.C. which shall find the VRS/Golden handshake scheme. (iii) The remaining fund will accrue to tourism Development Board which will go towards strengthening the tourism infrastructure in the State. (iv) While disinvesting the genuine interest of the workers will be protected. (v) The employees will be given a choice to take up identified properties on management lease basis for running them in lieu of retirement
6.	To promote sustainable tourism which is environmentally.	(a) Setting up new Units.	<ul style="list-style-type: none"> (i) All new hotels will have architecture which blends with the local environment. (ii) No building will be more than 4 storeys. (iii) Architecture & water harvesting structure will be mandatory. (iv) The basement/ground floor shall be for parking. (v) Proper garbage disposal & sewage plants are mandatory. (vi) Maximum employment to local person. (vii) No/minimum felling of trees.
		(b) Regularly existing Units.	<ul style="list-style-type: none"> (i) All hotels will be checked and must comply with the pollution control standards. (ii) Violating Units registration shall be registered.
		(c) Rural tourism for unconfined to rural people.	To divert tourists from over-saturated places, the concept of Rural Tourism has been adopted.
7.	To encourage Civil Societies & N.G.O's for promotion & conduct of tourism	(a) For capacity building.	(i) The Tourism Development Board will find NGO's working in the field of rural tourism, eco-tourism & community basis projects.

Sl. No.	Objectives	Strategy	Action Plan
	related activities.		(ii) For cleanliness drives & campaign against polythine bags.
		(b) Active participation.	(i) Will be represented on the boards & committees of Tourism Deptt./Board. (ii) Will be engaged in classification of hotels, certification of dhabas. (iii) Important events will be organized through the registered associations like paragliding, river rafting, mountain biking etc.
8.	Himachal as a one stop destination for adventure tourism.	(a) Tourism Dev. Board/Deptt.	(i) All media campaign will focus on adventure tourism. (ii) Will encourage the activities which has possibility of generating employment like paragliding & river rafting by organizing/funding training camps. (iii) Set up safety standards & enforce through Distt. Admn. (iv) Assist Deptt. Of YSS/WHMI. (v) Hold annual events as paragliding, river rafting mountain biking, motor sports, bird watching angling rock climbing, marathon races etc.
		(b) WHMI, Manali	(i) Will organize mass treks during Holidays for students in collaboration with Tourism Department. (ii) Will train students/un-employed youths (iii) Run river rafting & paragliding school set up by Tourism Deptt. (iv) Run special courses for tourists.

Contacts :

1. Department of Tourism & Civil Aviation
Block No. 28, SDA Complex, Kasumpti,
Shimla-9, Himachal Pradesh
Phone: 0177-2625864, 2623959, 2625924, 2625511.
Fax: 0177-2625864, 2623959
E-mail: tourismmib-hp@nic.in
himachaltourism@yahoo.co.in
website: <http://himachaltourism.nic.in>
2.
 - Distt. Tourism Development Office, Shimla
Phone: 0177-2625926.
 - Distt. Tourism Development Office, Solan
Ph: 094180-01393.

- Distt. Tourism Development Office, Mandi
Phone: 01905-225036.
- Distt. Tourism Development Office, Kullu
Phone: 01902-2257605; Res: 094181-64684.
- Distt. Tourism Development Office,
Kangra (McLeodganj)
Phone: 01892-221032.
- Asst. Tourism Development Office, Chamba
Phone: 01899-224002.

3. Tourist Information Centres :

- Shimla: 0177-2652561, 2654589, 2832498
- Manali: 01902-252175, 252325
- Dalhousie: 01899-242736
- Dharamshala: 01892-221205, 221232
- Chandigarh: 0172-2708569
- New Delhi: 011-23324764, 23325320
- Kolkata: 033-22126361
- Chennai: 044-25385689
- Mumbai: 022-22181123
- Ahmedabad: 079-27544800
- Pathankot: 0186-2220316

